ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

अगहन २०७६ दिसम्बर २०१९

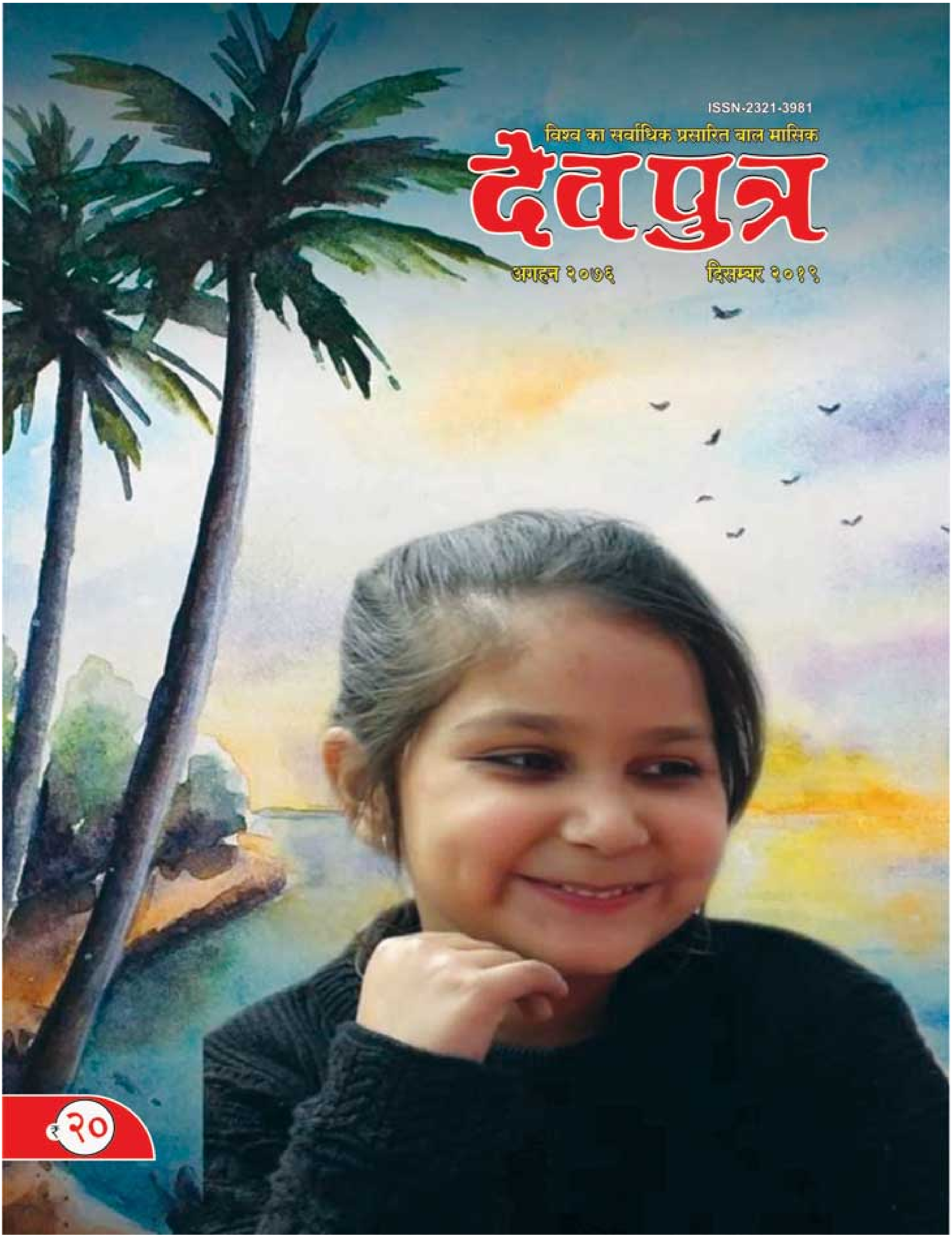

₹ २०

अब घर बैठे कीजिये
आई.ए.एस. की तैयारी
क्योंकि हम आ रहे हैं
आपके घर

दृष्टि The Vision | drishti
Think IAS Think Drishti

जानकारी के लिये कॉल करें-
9319290700
9319290701
9319290702
या सिर्फ मिस्ड कॉल करें-
8010600300

आई.ए.एस. प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स
(IAS Prelims Online Course)

प्रिय पाठकों,

हमारे यूट्यूब चैनल और वेबसाइट से जुड़े हज़ारों व्यूअर्स ने हमसे निवेदन किया था कि वे दृष्टि की कक्षाओं की गुणवत्ता का लाभ उठाना चाहते हैं किंतु दिल्ली में दो वर्ष रहने का लाखों रुपए का खर्च नहीं उठा सकते। उन्हीं के निवेदन को ध्यान में रखते हुए हम दृष्टि के 20वें स्थापना दिवस (1 नवंबर, 2019) पर अपना पहला पेन ड्राइव कोर्स जारी कर रहे हैं जो IAS प्रिलिम्स के पाठ्यक्रम पर केंद्रित है। इसमें आप सामान्य अध्ययन तथा सीसैट के कोर्स ले सकते हैं। लगभग 2 वर्षों की कठोर मेहनत से तैयार हुआ यह वीडियो कोर्स गुणवत्ता में अच्छे से अच्छे क्लासरूम प्रोग्राम को टक्कर दे सकता है। हमें विश्वास है कि यह कोर्स उस अंतराल को भरने में सफल होगा जो दिल्ली में रहकर तैयारी करने वाले और दिल्ली नहीं आ पाने वाले विद्यार्थियों के बीच बना रहता है। निकट भविष्य में हम IAS मुख्य परीक्षा और विभिन्न राज्यों की PCS परीक्षाओं के लिये भी ऑनलाइन कोर्स शुरू करेंगे।

आरंभ : 1 नवंबर, 2019 से

पहले 500 विद्यार्थियों को 20% की विशेष छूट

मोड : पेनड्राइव

कक्षाओं की गुणवत्ता को परखने के लिये डेमो वीडियोज़ हमारे यूट्यूब चैनल Drishti IAS की प्लेलिस्ट Online Courses में देखें

ऑनलाइन कोर्स से जुड़ी हर जानकारी के लिये हमारी वेबसाइट www.drishtiias.com पर FAQ पेज देखें

IAS प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

1. 500+ घंटे की सामान्य अध्ययन की कक्षाएँ।
2. 120+ घंटे की सीसैट की कक्षाएँ।
3. प्रत्येक कक्षा को 3 बार देखने की सुविधा ताकि आप रिवीज़न भी कर सकें।
4. कक्षाओं में डिजिटल बोर्ड का इस्तेमाल। इमेज, वीडियो आदि की मदद से कठिन विषय समझाने की शैली।
5. हर क्लास के अंत में उस टॉपिक से IAS में पूछे गए और अन्य संभावित प्रश्नों का अभ्यास।
6. स्टेट-ऑफ-द-आर्ट कैमरा और साउंड क्वालिटी जो क्लास के अनुभव को एकदम वास्तविक जैसा बनाती है।
7. प्रिलिम्स के ठीक पहले करेंट अफेयर्स की 30 ऑनलाइन कक्षाएँ (निशुल्क)।
8. ऑनलाइन प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़ (25+5 टेस्ट) की निशुल्क सुविधा।
9. क्विक बुक सीरीज़ की 8 पुस्तकें निशुल्क, जिनके अलावा कोई और स्टडी मैटीरियल पढ़ने की ज़रूरत नहीं।
10. इस कोर्स को करने के बाद अगर आप दृष्टि की किसी भी शाखा में सामान्य अध्ययन (फाउंडेशन कोर्स) करते हैं तो आपकी ऑनलाइन कोर्स की फीस की 50% राशि की छूट दी जाएगी।

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली) : 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
☎ 87501 87501

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज) : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
☎ 8750187501

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

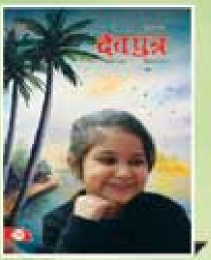

अगहन २०७६	▪ वर्ष ४०
दिसम्बर २०१९	▪ अंक ६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु -
खाता संख्या -53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

अभी एक दिन बैठे-बैठे बचपन के किस्से-कहानियाँ याद कर रहा था तो स्मरण आया हमारे एक गुरुजी हमसे २०-२० बार अक्षर सुधारने के लिए लिखवाया करते थे- ''ईमानदारी दुनिया का सबसे श्रेष्ठ गुण है।'' बाल्यकाल के इन कामों से अक्षर सुधरे हों या नहीं पर ईमानदार होने का महत्व हृदय की स्लेट पर ऐसी कलम से लिख गया कि उसे मिटाना कभी संभव नहीं।

भारत का मन मूलत: ऐसे जीवन मूल्यों को जीने वाला मन है। हमारी औपचारिक शिक्षा से इन जीवन मूल्यों का कोई संबंध नहीं। पिछले दिनों ऐसा ही एक समाचार पढ़ने को मिला। महाराष्ट्र के सतारा नगर के निवासी श्री धनजी जगदाले (५४ वर्ष) मजदूर हैं। मजदूरी की तलाश में वे बस स्टैण्ड पर खड़े थे कि उन्हें नोटों का एक बण्डल गिरा हुआ मिला। देखा तो पूरे ४० हजार रुपए थे। उन्होंने वे रुपये सही मालिक को ढूंढकर उन्हें सौंप दिए। उन महाशय ने आग्रह पूर्वक धनजी को १ हजार रु. का पुरस्कार देना चाहा तो उन्होंने विनम्रता से लेने से मना कर दिया। इस भागदौड़ में दिन भी निकल गया था। मजदूरी भी मिलना नहीं थी और जेब में घर लौटने का किराया १०रु. भी पूरा नहीं था। रुपयों के मालिक के अत्याधिक आग्रह पर धनजी ने उनका मन रखने के लिए ७ रु. लिए क्योंकि ३ रु. पहले से उनकी जेब में रखे हुए थे। इतना ही नहीं एक अप्रवासी भारतीय (एन.आर.आई) श्री राहुल बर्गे ने उन्हें ५ लाख रु. देने का प्रस्ताव दिया तो धनजी ने यह कहते हुए मना कर दिया कि - ''पराया धन लेने से मन कभी प्रसन्न नहीं होता। हर व्यक्ति को स्वयं ही ईमानदार होना चाहिए।''

बच्चो! धनजी जैसे वास्तविक नायक (रियल हीरो) हमारे आसपास ढ़ेरों हैं। बस आवश्यकता है उन्हें पहचानने की, उनको उचित सम्मान देने की। हम सब स्पाईडर मेन, बेट मैन और सुपरमेन बनें न बनें परन्तु धनजी बन गए तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- अनोखी दौड़ - मनोहर चमोली 'मनु' ०५
- इचकी और मिचकू - इंजी. आशा शर्मा १३
- पश्चाताप - तारादत्त जोशी २८
- तुम सही थे शौर्य - पवन चौहान ३८
- भोजन का डिब्बा - प्राजक्ता देशपाण्डे ४५

लघु कहानी

- चीकू की जिद - नीरजकुमार मिश्रा ३६

रेखाचित्र

- किस्से वाली काकी - दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' ०८

आलेख

- महान गणितज्ञ... - डॉ. सत्यकाम पहारिया २४
- मदन मोहन मालवीय - शन्तनु रघुनाथ शेण्डे २५

कविता

- दिव्यांग हमारे भाई बहन - हरीश दुबे ०६
- मन करता है - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ०७
- अटल बिहारी - आ. भगवत् दुबे ३१
- अपनी अपनी सबकी... - जय कुर्मी ४९

चित्रकथा

- दयालुराम - देवांशु वत्स १२
- ऐसे करें खरीदारी - संकेत गोस्वामी २०
- घोड़ों का वजन - संकेत गोस्वामी ४१

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १४
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी १६
- गाथा वीर शिवाजी की (३४) - २४
- विषय एक कल्पना अनेक - डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' - डॉ. गिरीशदत्त शर्मा - डॉ. आर.पी. सारस्वत २६
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे ३०
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी ३२
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४२
- यह देश है वीर जवानों का - ४३
- पुस्तक परिचय - ४४
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ४७
- छः अंगुल मुस्कान - ४८
- आपकी पाती - ४८

बाल प्रस्तुति

- संत घासीदास - ऋचा अग्रहरि १९
- पिता की सीख - नीतीश कुमार ३४

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!
देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक - **53003592502** IFSC-SBIN**0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

अनोखी दौड़

कहानी

मनोहर चमोली 'मनु'

जंगल में आज बैठक बुलाई गई थी। बस शेर के आने की देर थी। बंदर ने पूछा– ''आज बैठक क्यों बुलाई गई है? कोई खास बात?'' बिल्ली ने कहा– ''सुना है, जंगल में दिव्यांगों के लिए खेलों का आयोजन किया जा रहा है।''

यह सुनकर लोमड़ी हँस पड़ी। सियार ने कहा– ये लो कर लो बात। अब लूले–लंगड़े भी दौड़ लगाएंगे।''

बिल्ली ने बीच में टोका– ''क्यों इसमें बुरा क्या है?'' लकडबग्घा दाँत निकालते हुए हँसने लगा। हँसते–हँसते बोला– ''वे बेचारे अपनी जान बचाते हुए यहाँ–वहाँ मारे–मारे फिरते हैं, अब उन पर दया दिखाओ। ये भी खूब रही।''

बंदर ने लकड़बग्घे को रोकते हुए कहा– ''क्या–क्या कर रहे हो? एक तो वे बेचारे नहीं है। दूसरा उन पर दया दिखाने वाली कोई बात नहीं है। अनहोनी तो तुम्हारे साथ भी हो सकती है। हाथ–पाँव, आँख–कान तो तुम्हारा भी टूट सकता है। तब हम तुम्हें बेचारे कहें? तब हम तुम्हें भीख दें। तुम पर दया दिखाएं? बोलो?''

अभी बात चल रही थी कि शेर आ गया। शेर ने आते ही कहा–''हमारे जंगल में भी दिव्यांगों के लिए कुछ होना चाहिए। हम पहले–पहले दौड़ करवाएंगे। लोमड़ी ने कहा– ''महाराज! खेल तो खेल है। दिव्यांगों के लिए अलग से क्यों?''शेर बोला–''वो इसलिए कि आज की इस बैठक को ही देख लो। हर कोई आया हुआ है लेकिन एक भी दिव्यांग हमारी बैठक में नहीं है। क्या इस जंगल में एक भी दिव्यांग नहीं है?''

बिल्ली बोली– ''क्यों नहीं। बहुत से हैं। बंदर, चूहा, गाय, बकरी, गधा, कुत्ता, गिलहरी, खरगोश और भेड़ को कौन नही जानता। किसी का एक हाथ तो किसी का एक पाँव नहीं किसी न किसी कारण टूटा हुआ है या कटा हुआ है। वे डर के मारे अपने घरों से बाहर ही नहीं निकलते।'' हाथी ने सिर हिलाते हुए कहा– ''कहीं कोई उनका उपहास न उड़ाए, इस वजह से भी वे यहाँ–वहाँ नहीं दिखाई देते।'' शेर ने कहा– ''तभी तो हम चाहते हैं कि उनके लिए भी खेलों का आयोजन हो। वे भी तो हमारी ही तरह हैं। उन्हें हमारी दया नहीं चाहिए। हमारे अपनेपन और सहयोग से वह सुखी जीवन बिता सकते हैं। हम इस दौड़ का आयोजन करेंगे। दौड़ में जो प्रथम आएगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। खेल तो एक बहाना है। हम चाहते हैं कि इस जंगल में हम सब एक दूसरे से प्यार करें। हमारे भीतर भाईचारा हो। सहयोग और सहायता की भावना से जिएँ।''

हाथी ने सूंड लहराते हुए कहा– ''ये अच्छा ही है। लेकिन यह खेल लगातार होने चाहिए। इससे मेलजोल बढ़ेगा। दिव्यांग खुद को अकेला और असहाय नहीं समझेंगे।'' वन में तैयारी होने लगी। खेल प्रशाल (स्टेडियम) खचाखच भरा हुआ था। सौ मीटर की दौड़ होने वाली थी। बंदर, चूहा, गाय, बकरी, गधा, कुत्ता, गिलहरी, खरगोश और भेड़ दौड़ के लिए तैयार थे। वे सभी अपने अपने समर्थकों के साथ दौड़ने वाली रेखा पर जाकर खड़े हो गए।

शेर के साथ–साथ अब लकड़बग्घा,

लोमड़ी और सियार भी उन सभी का जमकर उत्साहवर्द्धन करने को तैयार खड़े थे। दर्शक दौड़ के मैदान को चारों और से घेरकर खड़े थे। मुकाबला कड़ा होगा। हर कोई यही सोच रहा था। सभी प्रतिद्वंद्वी अपनी शारीरिक दिव्यांगता को भूलकर शेर की बंदूक की ओर देखने लगे। हाथी ने गिनना शुरु किया। शेर ने हवा में गोली दाग दी। नौ के नौ धावक दौड़ पड़े। उनकी चाल बहुत तेज नहीं थी। लेकिन वह सभी जीत के प्रति उत्सुक दिखाई दे रहे थे। हर कोई एक दूसरे का पीछे छोड़ना चाहता था। तभी चूहा लड़खड़ाया और गिर पड़ा। वह रोने लगा।

मैदान से आने वाला शोर थम गया। चूहे की आवाज सुनकर दौड़ रहे सभी धावक रुक गए। गिलहरी पलट कर वापिस आ गई। उसने चूहे को उठाना चाहा। लेकिन वह भी गिर पड़ी। गाय, बकरी, कुत्ता, खरगोश और भेड़ भी रुक गए। वे सब चूहे के नजदीक आकर खड़े हो गए। कुत्ते ने चूहे को उठाकर खड़ा किया। गाय ने चूचूं पर लगी धूल झाड़ दी। गधे ने चूहे के आँसू पोंछे। बकरी और गिलहरी ने चूहे के हाथ पकड़ लिए। बंदर, खरगोश और भेड़ ने उसका हौंसला बढ़ाया। गधे ने कहा– ''चलो। हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़ लेते हैं। हम सब मिलकर दौड़ेंगे। एक साथ।''

यही हुआ। सब एक दूसरे का हाथ पकड़कर दौड़ने लगे। एक साथ मिलकर सब दौड़ की अंतिम रेखा तक जा पहुँचे। दर्शक चकित थे। इससे पहले किसी ने भी ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था। दौड़ की अंतिम रेखा को सभी ने एक साथ छू लिया था। दर्शकों ने खड़े होकर तालियाँ बजाई। चीते ने कहा– ''सब प्रथम आए हैं।'' शेर ने घोषणा की– ''एक दौड़ के लिए एक नहीं नौ पदक बांटे जाएंगे। यह दौड़ किसी एक को प्रथम नहीं मानती। दौड़ में सभी का उत्साह देखने लायक था। जीतने के प्रति साहस की भावना सभी में थी।'' दूसरे ही क्षण धावकों के गले में पदक चमचमा रहे थे।

– भिंताई (उत्तराखण्ड)

।। विश्व दिव्यांग दिवस : ३ दिसम्बर ।।

दिव्यांग हमारे भाई-बहिन

कविता

हरीश दुबे

दिव्यांग हमारे भाई–बहिन।
क्यों करे अकेले कष्ट सहन।।
हम बनें सहारा मुस्काकर,
नन्हीं बाहों को फैलाकर,
कहते हैं कहानी सजल नयन ।
दिव्यांग हमारे भाई–बहिन।।
मेधावी प्रतिभाशाली हैं,
घर की बगिया के माली हैं,
बातों से इनकी झरे सुमन।

दिव्यांग हमारे भाई–बहिन।।
बाधाएं नहीं इनको संकट,
कितनी सशक्त इनकी जीवट,
कोमल तन में मजबूत है मन।
दिव्यांग हमारे भाई–बहिन।।
मुख जगमग चंदा सा चमके,
शुभ कीर्ति जहाँ जाये महके,
इनका 'हरीश' है नील गगन।
दिव्यांग हमारे भाई–बहिन।।

– महेश्वर (म.प्र.)

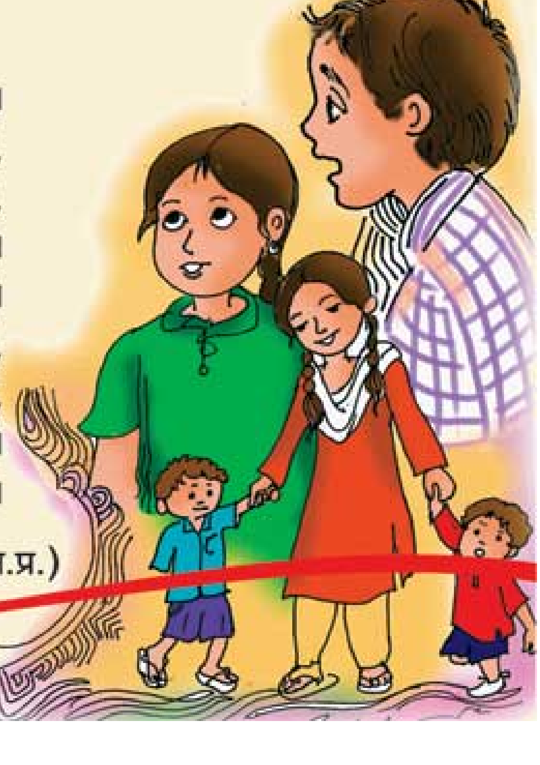

मन करता है

कविता

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

मन करता है चिड़ियों जैसा
उड़कर आसमान में जाऊँ।
मन करता है हिरनों जैसी
भरूँ चौकड़ी दौड़ लगाऊँ।
मन करता है हरी घास पर
कूदूँ खूब और सो जाऊँ।
मन करता है पानी में घुस
मछली जैसा तैर दिखाऊँ।
मेंढक जैसा उछलकूद कर
टर्र-टर्र कर गाना गाऊँ।
फूल बनूँ मैं या गुलाब का
सभी ओर खुशबू फैलाऊँ।
मन करता है भौंरा बनकर
फूलों से मैं प्यार करूँ नित।
रंग बिरंगी तितली सा उड़
उनसे मीठी बात करूँ नित।
मन करता है परियों जैसा
पंख लगा मैं भी उड़ पाऊँ।
मन करता है सूरज के संग
जाकर अभी बात कर आऊँ।

– नोएडा (उ.प्र.)

किस्से वाली काकी

रेखाचित्र

दिनेशप्रताप सिंह 'चित्रेश'

मुझे आज भी याद है, बाग के किनारे आबाद, मिट्टी का लिपा–पुता खपरैल घर और उसके आगे नीम के नीचे तुलसी चौरा पर शाम को दिया जलाती वह वृद्धा... मझोला कद, गेहुंआ रंग, झुर्रियों से भरा चेहरा, सफेद बाल और ममता से भरी आँखें... दोपहर में हम उधर से गुजरते तो वह पसीना–पसीना हुई तन्मयता से जड़ी–बूटियाँ कूट–छान रही होतीं...

यह थी काकी। गाँव में तब कई काकियाँ थी। इनकी अलग पहचान के लिए हम हर एक काकी के साथ अलग विशेषण लगा देते थे। यह हमारे बीच 'किस्सा वाली काकी' के नाम से जानी जाती थी। यह जो काकी थीं, बचपन में हम बच्चों पर इनका खासा असर था। इनकी वजह से ही नागपंचमी बीती नहीं, कि हम दीवाली के दिन गिनने लगते थे...

जबकि उन दिनों दीवाली में न धूम धड़ाका होता था न चमक–दमक रहती थी। नागपंचमी झूला और कजली लेकर आती थी। इसमें गुड़िया पीटने का खेल और दंगल का आयोजन होता था। जन्माष्टमी में गाँव के मंदिर में पूजा पाठ का भव्य आयोजन होता था। इसमें कृष्ण के बाल लीला की झाँकी हमें आकर्षित करती थी। दशहरा पर पड़ोस के गाँव में मेला लगता और वहाँ खूब बड़े रावण का दहन होता। विद्यालय में लम्बी छुट्टी होती थी। होली में रंग और अबीर की धूम रहती, फिर इन पर्वो पर पूड़ी कचौड़ी,खीर, गुझिया,मालपुआ जैसे पकवान खाने को मिलते थे।

दीवाली के साथ ऐसा कुछ न था। सबेरे गाँव का कुम्हार मिट्टी के दिये और कुछ खिलौने दे जाता था। चीनी गलाकर लकड़ी के सांचे में ढाल के बनाई गई पशु–पक्षियों की आकृति वाली चिरई नाम की मिठाई भी आती थी। यह लाईचूरा के साथ खाई जाती थी। मुझे यह बिलकुल नापसंद थी। इस त्योहार पर बनने वाला खाना चावल, रोटी और देशी सूरन की सब्जी। यह सब्जी कैसी भी जतन से बनाई जाती मगर जीभ और गलफरों में खुजलाहट पैदा करने से बाज न आती। लिहाजा इसके नाम से ही मुझे चिढ़ थी।

दीये जलाने में थोड़ा मजा जरूर आता था, लेकिन हम घर के आसपास जो खेत थे, पेड़, पशुशाला, देवस्थान, कुँआ, तुलसी चौरा था, वहाँ दीया रखते थे। किन्तु यह शायद ही एक मिनट से अधिक टिमटिमाते रहे होंगे। तेल में भीगी बत्ती कितनी देर जलेगी? ले–देकर उजाले के नाम पर दरवाजे के सामने जलती लालटेन बचती। बाकी सब तरफ धुप्प अंधेरा और खामोशी की जकड़न...

उन दिनों सयानों की हिदायत रहती थी कि दीवाली की रात पढ़ाई जरूर कर लेनी चाहिए। हम किताब कापी खोलकर बैठते भी... किन्तु पढ़ाई तब हो, जब मन लगे। खैर... हम एक दो सवाल हल करके पढ़ने का शगुन पूरा करते और चुपचाप काकी ओर ओसारे में पहुँच जाते। काकी मचिया पर बैठी हुक्की गुड़गुड़ा रही होती। धीरे–धीरे काकी के यहाँ श्रीराम,

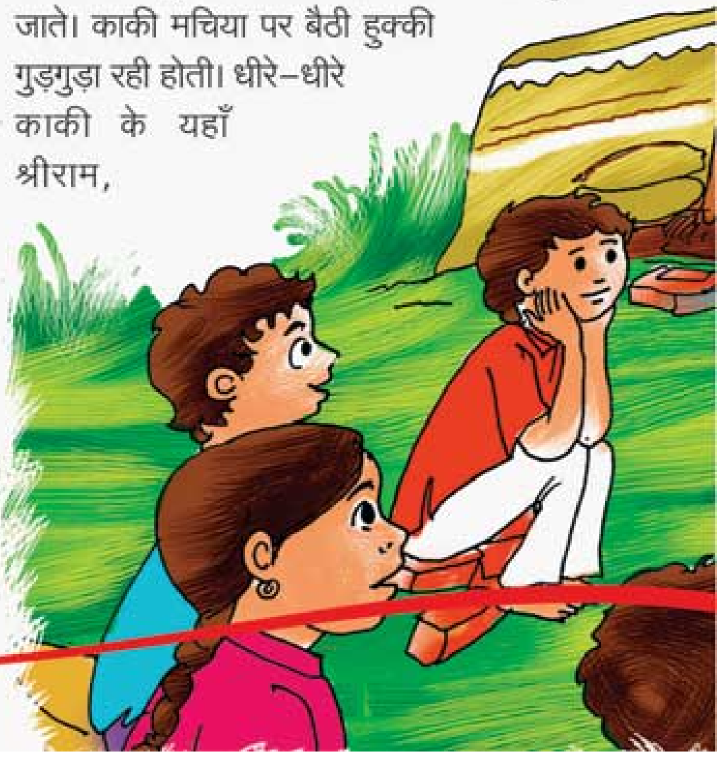

ठाकुर प्रसाद, दीनानाथ, त्रिवेणी, शोभाराम, हरीलाल वगैरह दस–बारह हम उम्र लड़के आ जुड़ते। जैसे ही हम में से कोई आकर उन्हें ''काकी! पायलागी'' का अभिवादन करता, वे आशीर्वाद देकर तुरंत पूछतीं– ''का बचवा, दियाली के बाद माई बाबू, दादा–दादी के पैर छुए। कुछ पढ़ाई लिखाई किये?''

''हाँ काकी!'' हम सरपट जवाब देते वे मचिया खिसकाकर आराम से दीवाल का टेका लगा लेतीं। हम पुआल का बीड़ा, ईंट, बोरी जो भी मिलता उसी पर काकी को घेर कर बैठ लेते। काकी का अगला सवाल होता ''हाँ तो बचवा! अब बताओ आए कैसे?''

''किस्सा सुनने।'' हमारा जवाब होता।

काकी थोड़ी देर चुप रहती। कोई हमारे बीच से फिर टोकता, तो कहती – ''अच्छा बताओ। कैसा किस्सा सुनोगे, आप बीती या जगबीती?

''जो मर्जी वह सुनाएं, लेकिन देर न करें, ''हम मनुहार करते थे।

बताना क्या था? काकी के पास पाँच–दस नहीं, पूरा किस्सों का खजाना था। एक से बढ़कर एक परियों की कहानियाँ राजा–रानी, साहूकार–किसान, जंगली जानवरों, राक्षसों और भूत प्रेत की गाथाएँ। कई किस्से तो वे गाकर सुनाती थीं। अकबर–बीरबल, तेनालीराम, गोनू झा, गोपाल भांड, सरबतिया नाई की बुद्धि के चमत्कार भरे कारनामे। शेखचिल्ली और लालबुझक्कड़ की गुदगुदाने वाली करतूतें। उनके पास ढेरों किस्से तो चोर, डाकुओं और ठगों के थे। इन किस्सों के चोर डाकू समाज के सताए लोग होते थे। यह बेईमानी और भ्रष्टाचार की कमाई करने वालों को चेतावनी देकर लूटने जाते थे। ठगों से तो राजा–महाराजा भी डरते थे। यह गरीबों और लाचारों के मददगार होते थे, इसलिए हमें अच्छे लगते थे। परियाँ दयालु और परोपकारी होती थीं। परेशान लड़के–लड़कियाँ इनकी मदद पाकर निहाल होते थे। इसके अलावा कहानियों से निकलने वाली कहानियाँ जैसे पूत बुलाकी के किस्से, इसमें पहले एक अचरज भरी घटना होती, फिर इसके पीछे के कारणों की उधेड़बुन काकी इतने मजेदार ढंग से करती थीं कि हमारी सुध–बुध खो जाती थी।

कभी–कभी काकी कहानी सुनाने का मामला ज्यादा झुलाती, तो हमारी तरफ से ही किस्सा तय होता था। अक्सर हम राजा–रानी वाला किस्सा चुनते। यह कहानियाँ हमारी खास पसंद हुआ करती थीं। इन कहानियों के राजा न्यायप्रिय, बहादुर, प्रजापालक और बुद्धिमान होते या फिर घमंडी, मूर्ख और शेखीबाज। दूसरी तरह के राजा लकड़हारा, मछुआरा और डोम जैसे साधारण लोगों से पराजित होते। जीतने वाले के साथ बहन ब्याहते और आधा राज्य देते, तब कहीं जाकर छुट्टी

पाते...।

काकी कहानी शुरु करने से पहले 'हुंकार' देने के लिए एक लड़के को नियुक्त करती। ज्यादातर इसका जिम्मा श्रीराम पर होता था। इसके बाद वे शुरु हो जातीं– ''एक राजा था। उसके छोटे राजकुमार का नाम था हिम्मतराय। एक दिन वह कहीं से लौटा, भौजाई से बोला– ''एक गिलास पानी तो देना।''

भौजाई तुनक जाती है– ''तुम तो ऐसे हुकुम चला रहे हो, जैसे फूल कुमारी को ब्याह के लौटे हो।''

हिम्मतराय को बात चुभ जाती है। वह ठान लेता है– ''अब इस महल का अन्न जल तभी ग्रहण करूँगा, जब फूलकुमारी को ब्याह कर लौटूंगा।''

वह घुड़साल से सबसे अच्छा घोड़ा लेता और सवार होकर सरपट दौड़ा देता...शहर, गाँव, खेत, फिर बाग सब पीछे छूटने लगता है... घोड़ा आगे और आगे बढ़ता जाता है... इसी के साथ हमारी जिज्ञासाएं भी कुलांचें भर रहीं होतीं... कौन है फूलकुमारी? कहाँ होगी और कैसे पहुँचेगा हिम्मतराय उस तक?

ढिबरी के पीले उजाले में हम काकी को घेरे कहानी सुन रहे होते कहानी के हरेक वाक्य के अन्त में श्रीराम एक सधा हुआ 'हूँ' का हुँकारा लगाता रहता...शाम के समय राजकुमार एक चौराहे पर पहुँचता, वहाँ चेतावनी टंगी होती– ''मुसाफिर होशियार, पूरब जाओ, पश्चिम और उत्तर जाओ। मगर दक्षिण की राह हर्गिज न पकड़ो, खतरा है...''

और हिम्मतराय का साहस देखिए, वह अपना घोड़ा दक्षिण दिशा में मोड़ देता है... हमारी जिज्ञासा और गाढ़ी हो जाती है, बल्कि इसमें थोड़ा भय और रोमांच भी आ जुड़ता था। काकी के घर से थोड़ा आगे महाजन की घनी बाग का डरावना अंधेरा, गन्ने के खेतों की सरसराहट और कहानी के ऐसे मोड़ पर काकी की आवाज में पैदा होने वाली थरथराहट कहानी के भय को और बढ़ा देती थी। हम चुपचाप थोड़ा सा खिसककर काकी से चिपक से जाते थे... करीब–करीब इसी समय, जब हम रहस्य रोमांच से भरे ''आगे क्या होगा'' की फिक्र में डूबे होते, तभी काकी कहानी रोक देती थीं। गाय बैल की हौदी में भूसा डालती। बाहर कोई सामान पड़ा होता तो अन्दर रखती और फिर मचिया पर आ बैठतीं। हमें कहानी की जल्दी होती। हम मचलते– ''हाँ, तो काकी! आगे...''

''पहले यह बताओ, तुम झूठ क्यों बोले कि पढ़ाई पूरी करके किस्सा सुनने आए हो?'' पता नहीं कैसे वे हमारी कमजोरी भाँप लेती थीं। कौन ठीक से दातून नहीं करता? किसे झूठ बोलने या कसम खाने की आदत है? कौन माँ–बाप का कहा सुना नहीं मानता? यह सब उनको पता होता था। आगे ऐसा न करने का वादा लेकर ही वे कहानी आगे बढ़ाती थी। हम उनसे झूठा वादा नहीं करते थे। काकी का हम पर ऐसा असर था कि जीवन में अनुशासन स्वयं उपस्थित रहता था। हम समय से नहाते धोते, किताब–कापी व्यवस्थित, पढाई–लिखाई ढर्रे से, अध्यापक खुश, माँ बाप निश्चिंत....हम बगैर ट्यूशन और गाइड के भी फर्स्ट और सेकंड क्लास पास होते। किस्सा गोष्ठी भी जमी रहती... काकी की किस्सा सुनाने की कला गजब की थी। शेर की बात करती तो गर्राहट के साथ, लोमड़ी बोलती तो सिकलाते हुए...जैसा पात्र वैसी बोली। कहानी खुशी का माहौल होता तो आवाज में चहक होती, दुख के मौके पर बोली मंद होकर भर्रा जाती। स्वर करीब–करीब सामान्य ही रहता था। बस बोलने की शैली से राजा की अधिकार सम्पन्नता और धन दौलत होते हुए भी साहूकार की परतंत्रता उनके मुँह से जीवंत हो उठती थी।

काकी हमें अच्छी लगती थीं। उनका छोट सा घर, सफेद गाय, काले बैलों की जोड़ी, तुलसी चौरा, घर के आगे पीछे लगे दर्जनभर आम, कटहल, नीम और महुआ के पेड़ सब हमारी आँखों को सुख देते थे। मगर काकी की एकमात्र लड़की सुमित्रा हमें फूटी आँख भी नहीं भाती

थी। वह अपने ससुराल में रहती थी। होली के आसपास उसका आदमी उसे यहाँ छोड़ जाता था।

सुमित्रा गुस्सैल थी। काकी के पास हमें देखकर वह ऐसी नाक भौं सिकोड़ती कि क्या कहा जाए। चार छह दिन बीतते बीतते वह हमारे सामने ही काकी को फजीहत करने वाले अंदाज में समझाने लगती– ''माई! ये बेकार की बैठक बाजी हमें पसंद नहीं। नींद हराम हो जाती है। लेकिन हमारी मर्जी से किसी को क्या लेना–देना...''

इसके दो–चार रोज बाद हमारी किस्सा गोष्ठी का अंत हो जाता। काकी समझाती – ''बचवा लोगो! अब इम्तिहान आने वाला है। पूरा ध्यान पढ़ाई–लिखाई में लगाओ। किस्सा–किहानी बन्द...'' अपनी मित्र मंडली में हम सुमित्रा को खूब कोसते– ''इस चुड़ैल को मौत भी नहीं आती...''

गाँव के बड़े–बूढ़े भी सुमित्रा से कुढ़ते थे। काकी गाँव वालों के लिए वैद्य और दायी की हैसियत रखती थीं। लोगों को बीमारी–अजारी में वे चूरन, काढ़ा, गोली और चटनी मुफ्त दिया करती थीं। उनकी इस सेवा के बदले में गाँव वाले खेती बारी में उनकी दिल खोलकर मदद करते थे। सुमित्रा को इसकी समझ नहीं थी। उसके रहते कोई दवा लेने या बहू–बेटी की जचगी कराने के लिए उनको बुलाने आता तो उसके पीठ फेरते ही वह काकी को कोसने लगती– ''माई! तुम भी न। मिलना मिलाना एक घेला नहीं, बेमतलब हलकान होती हो...''

लोग अनसुनी करके उसकी बात झेल लेते थे। वह काकी के पास बरसात तक रहती थी। यह गाँव वालों के लिए बड़ा व्यस्त समय होता था। इसी बीच फसलें तैयार होतीं, खलिहान सजते, शादियाँ भी इसी मौसम में पड़ती थी। हमारी परीक्षाएँ होती आने वाली बरसात को ध्यान में रखते हुए लोग छान छप्पर भी दुरुस्त करते थे। गाँव में बारातें आती, नाच–गाना होता... गाँव का ठहरा ठहरा समय जोरों से चल पड़ता था। इस बीच सुमित्रा खलिहान निपटाने में काकी का हाथ बंटाती थी। फिर एक दिन ऐसा आता, जब वह काकी से खूब लड़ती। इसके दो चार दिन में उसका पति बैलगाड़ी लेकर आता और उसे लिवा जाता था।

गाँव की बड़ी–बूढियों का कहना था– ''इसका हर साल यही नाटक है, पहले अनाज, गुड़, घी वगैरह बिकवाकर पैसा मुट्ठी में करती है और फिर लड़–झगड़कर... ऐसी बदजात लड़की भगवान दुश्मन को भी न दें...''

पता नहीं सबकी बद्दुआ का असर था या और कोई बात... एक दिन उड़ती हुई खबर आई –''सुमित्रा को कालरा हुआ, दवा–दारू के बीच वह दुनिया से विदा हो गई'' काकी पर वज्रपात हो गया। अपनी बदमिजाज लड़की से उनको पता नहीं कितना लगाव था कि वे एकदम 'अबोल' हो गयीं। सदमें में घिरी एकदम आसमान ताकती रहती गाँव में उनकी पहचान जीवट वाली महिला के रूप में थी। बस्ती में किसी के यहाँ कोई दुर्घटना हो जाती तो पूरे परिवार का मनोबल मजबूत करने के लिए वे जमीन आसमान एक कर देती थीं। मगर अब...

किस्सा सुनाते सुनाते काकी हमारी लिए कहानी जैसी ही बन गई थी। इसलिए उनका इस तरह सुन्न होकर हाथ पैर ढीला कर देना हम बच्चों को भी अचरज की बात लग रही थी। उनकी कोई भी कहानी अचानक ऐसे ठप् नहीं होती थी, गाँव औरतें और मर्द सब कोशिश करते रहे, लेकिन काकी के मुँह से आवाज नहीं निकली। तीसरे दिन उन्हें लकवा मार गया। सुमित्रा के आदमी यानी काकी के दामाद को खबर की गई। वह पत्नी के न रहने से पहले ही काफी दुखी था। फिर भी खबर पाने के अगले दिन वह अपनी लड़की को लेकर बैलगाड़ी से दोपहर बाद यहाँ आ गया था। मगर काकी का भी जवाब नहीं... वे एक घंटा पहले ही वैदकी के नुस्खों और किस्से कहानियों की गठरी लादे बेटी के पास जा चुकी थीं।

– जासापारा (उ.प्र.)

दयालु राम

चित्रकथा : देवांशु वत्स

इचकी और मिचकू

कहानी

इंजी. आशा शर्मा

जब से मिचकू गिलहरी इचकी के साथ रहने आई है तब से इचकी के दिन मजे में बीत रहे हैं। दिनभर साथ–साथ घूमना–फिरना... बतियाना–खेलना और खाना–पीना... दोनों बहुत मस्ती करती हैं। इचकी ने उसे अपने पास वाले पेड़ पर ही रहने की जगह भी बता दी।

इचकी जिस पेड़ पर रहती है वह अनाज मंडी के कोने में है। यहाँ खाने पीने की कोई कमी नहीं है। तरह–तरह के अनाज और दाने यहाँ दुकानों और ट्रकों में भरे रहते हैं। बस! खाना जमा करने में जरा सी सावधानी बरतनी पड़ती है वरना कभी भी किसी गाड़ी या ट्रक के नीचे आ गए तो फिर भगवान ही मालिक है।

सुबह–सुबह जब अनाज मंडी में सब सोये रहते हैं तब इचकी घूम–घूम कर अपना मनपसंद भोजन इकट्ठा करती थी और फिर दिनभर अपने कोटर में बैठ कर मंडी की हलचल देखती रहती थी। तरह–तरह के लोग और उतने ही रंग–बिरंगे उनके कपड़े... सबका बात करने और चलने फिरने का ढंग भी एकदम अलग... इन सबके बीच इचकी का दिन कैसे निकल जाता था उसे पता ही नहीं चलता था।

जब वह लोगों को झुंड बनाकर बातचीत करते या मिल–बैठकर खाना–पीना करते देखती तो अक्सर सोचती थी कि काश! उसका भी कोई मित्र होता। मिचकू के आने से उसकी ये इच्छा पूरी हो गई थी।

मिचकू इससे पहले ''बीज उपचार केन्द्र'' के बाहर लगे पेड़ पर रहती थी लेकिन वहाँ दिनभर रसायनों के बीच रहने से उसकी तबियत खराब रहने लगी थी इसलिए वह नया ठिकाना ढूँढते–ढूँढते यहाँ आ गई।

मिचकू दानों और कीटनाशकों को पहचानने में बहुत माहिर थी। कौन सा दाना पौष्टिक और स्वादिष्ट है... कौन सा अनाज बासी या बेकार है... किस पर कितनी मात्रा में कीटनाशक छिड़का हुआ है... कौनसा कीटनाशक कितना खतरनाक है... इन सबको वह देख और सूंघ कर पहचान लेती थी। वहीं इचकी को इस तरह की कोई जानकारी नहीं थी। वह सिर्फ अपनी पसंद और स्वाद का ही ध्यान रखती थी और इस मामले में वह थोड़ी स्वार्थी भी थी। इचकी अपना मनपसंद भोजन मिचकू से छिपाकर रख लेती थी और उसकी अनुपस्थिति में मजे लेकर खाती थी।

आज दिन चढ़ने पर भी जब इचकी पेड़ से नीचे नहीं उतरी तो मिचकू को उसकी चिंता हुई। वह मंडी में खड़े ट्रकों और आने–जाने वाले लोगों के पैरों से स्वयं को बचाते हुए इचकी के पेड़ तक पहुँची।

मिचकू ने देखा कि इचकी अपने कोटर में अचेत अवस्था में पड़ी है। मिचकू ने उसे हिलाया–डुलाया तो उसने जरा सी आँखें खोली लेकिन फिर से अचेत हो गई। मिचकू घबराई नहीं। वह सोचने लगी।

''कल रात तक तो ये भली–चंगी थी, अब अचानक इसे क्या हो गया।'' मिचकू ने इधर–उधर देखा–समझा फिर उसने कोटर को टटोला तो उसे वहाँ खाई हुई मूंगफली के छिलके दिखाई दिए।

मिचकू ने उन्हें ध्यान से देखा और सूंघा तो वह समझ गई कि इन दानों में खतरनाक किस्म का कीटनाशक लगा हुआ है जो बीजों को उपचारित करने

के काम में लिया जाता है।

मिचकू इचकी को थपथपा कर होश में लाई और ढेर सारा नमक डाल कर वह पानी इचकी को पिलाया। थोड़ी ही देर में इचकी ने उल्टियाँ करनी शुरु कर दी। अब वह खतरे से बाहर थी।

''तुम्हारे पास ये विषैले दाने कहाँ से आये? कल शाम तक तो तुम ठीक थी।'' मिचकू ने पूछा।

''ये दाने मैंने तुम से छिपाकर रखे थे। सुबह इन्हें खाते ही मेरा सिर चकराने लगा और फिर उसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ पता नहीं।'' इचकी को दाने छिपाने वाली बात बताते हुए बहुत लज्जा आ रही थी।

''लेकिन मुझसे छिपाए क्यों?'' मिचकू अभी भी चकित थी।

''ये मोटे–मोटे दाने एक ट्रक में लदे हुए थे। दिखने में इतने स्वादिष्ट लग रहे थे कि मेरा मन ललचा गया। मैं अभी कुछ ही दाने बटोर पाई थी कि वह ट्रक चल पड़ा। दाने कम थे इसलिए मैं इन्हें अकेले ही खाना चाहती थी।'' इचकी ने सिर नीचे करके उत्तर दिया।

''और अकेले खाने के चक्कर में अपने प्राणों को खतरे में डाल दिया।'' मिचकू मुस्कुराई। इचकी अब भी सिर झुकाए हुए थी।

''अरी इचकी! मित्र होते ही इसलिए हैं कि विपत्ति में काम आयें... अगर तुम मुझे भी इन दानों के बारे में बता देती तो ये दुर्घटना नहीं होती। अब चल मेरे कोटर में... आज मैंने अखरोट जमा किये हैं... मजे से खायेंगे...'' मिचकू ने कहा तो इचकी प्रेम से उसके गले लग गई।

''आज से मैं वचन देती हूँ कि जो भी अनाज दाना जमा करूँगी हम दोनों एकसाथ मिल–बांटकर खायेंगे।'' इचकी ने कहा और दोनों मिचकू के कोटर की तरफ अखरोट भोज करने चल दीं।

– बीकानेर (राज.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- रावण के वध के बाद लंका का राजा कौन बना?
- द्रौपदी के स्वयंवर में लक्ष्य-वेध किसने किया था?
- ईसा मसीह १६ से ३० वर्ष की आयु तक चौदह वर्ष कहाँ रहे?
- केरल का प्रसिद्ध गुरुवयूर मंदिर किसे समर्पित है?
- श्रीकृष्ण विष्णु के कौन से अवतार हैं?
- सम्राट अशोक ने पूरे भारत में यज्ञ करने पर रोक लगा दी थी। अशोक के निधन के पचास साल बार राजसूय यज्ञ किसने किया?
- किस प्रसिद्ध कवि ने -'भारत भारती' नाम से काव्य में प्राचीन भारत के गौरव का वर्णन किया है?
- काकोरी कार्रवाई में पं. रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह के साथ फाँसी पाने वाले चौथे क्रांतिवीर कौन थे?
- बाप्पा रावल की स्मृति में स्थापित कौन सा नगर अब पाकिस्तान में है?
- गत २६ फरवरी को वायुसेना के भारतीय वीरों ने पाकिस्तान के किस स्थान पर बने आतंकी अड्डे को तीन सौ से अधिक जिहादियों के साथ नष्ट कर दिया था?

(साभार : पाथेय कण)

(उत्तर इसी अंक में)

|| स्तंभ ||

स्वयं बनें वैज्ञानिक : चलो रंगीन पानी का पहाड़ बनाते हैं

आलेख
डॉ. राजीव तांबे

अनुवाद
सुरेश कुलकर्णी

प्रिय मित्रो! आज हम रंगीन पानी का पहाड़ बनाते है। इसके लिए क्या क्या लगेगा यह आपको बता देता हूँ।

काँच के ४ गिलास

एक काँच का बड़ा जग

लाल, नीला, हरा और पीला ऐसे ४ रंग में पानी में घुल सकते हैं।

४ चाय के चम्मच

एक बड़ा चम्मच

एक कटोरी नमक

दो गिलास ठंडा पानी

अब चलो हम तैयार है रंगीन पानी का पहाड़ बनाने के लिए। प्रारंभ में काँच के चारों गिलास एक पंक्ति में रख देते हैं। पहले दो गिलास में ठंडा पानी डाले और बचे दो गिलासों में गरम पानी डाल दो। अब पहले गिलास में जिसमें हमने ठंडा पानी डाला है उसमें दो चम्मच नमक डालकर हिलाये ताकि वह नमक उसमें घुल जाए। अब पहले गिलास में नीला रंग डालकर उसे हिलाये और दूसरे गिलास में पीला रंग डालकर उसे भी हिलाये, अब तीसरे गिलास में लाल रंग मिलाये और उसे हिलाये, बचे चौथे गिलास में हम हरा रंग डालकर उसे हिलाकर रखते हैं। अब हमारे पास नीला, पीला, लाल और हरा ऐसे चार रंग के गिलास हैं।

अब हमारे पास जो काँच का बड़ा जार है उसे पहले एक कपड़े से पोंछ लो और अनुमान से एक इंच इस तरह नीले रंग का पानी धीरे–धीरे, आराम से डालना है। अब बड़े चम्मच में पीले रंग का पानी लेकर वह काँच के बड़े जार के किनारे से धीरे–धीरे डाले, यह काम करते समय नीले रंग का पानी हिले नहीं यह जरूर ध्यान रखना, यह पीले रंग का पानी भी हमें अंदाजन एक इंच तक डालना है। इसी प्रकार से हमें लाल पानी और हरा पानी चम्मच से धीरे–धीरे बिना किसी हड़बड़ाहट से डालना है और उस कारण पानी न हिले इसका भी ध्यान रखना है।

अब देखें। नया कारनामा। क्या हुआ? अब जग में रंगीन पानी का पहाड़ तैयार हो गया है ना?

पानी में नमक डालने के बाद पानी का घनत्व बढ़ जाता है। पानी का तापमान हमने गरम पानी डाला था इसलिए पानी का घनत्व कम हो जाता है। यदि गिलास में दो अलग अलग घनत्व वाले तरल खाद्य पदार्थ धीरे–धीरे डाले जाते हैं तो तरल पदार्थ का उच्च घनत्व नीचे तक चला जाता है और कम घनत्व वाला द्रव उपर रहता है।

अब आपको एक काम देता हूँ।

आप नमक की जगह शक्कर का प्रयोग करके देखो और बताइये क्या होता है। चलो प्रयोग प्रारंभ करो मित्रो! और लिखकर मुझे अवश्य बताना। आपके पत्रों की प्रतीक्षा है हमें।

–पुणे (महा.)

समर्थ गुरू स्वामी रामदास

पुरोहित जी मंत्रोच्चार करते हुए भविष्य तैयार कर रहे थे। उन्हें घेर कर बैठे थे, दो ब्राह्मण परिवारों के सदस्य एक जम्वा गांव का और दूसरा असन गाँव का। परिवार के लोगों के अतिरिक्त अनेक इष्ट-मित्र, परिचित भी बैठे थे। सभी शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में थे।

बानाजी बूबा की पुत्री हाथ में स्रुवा पकड़े अपने पिता के पास बैठी थी। उसकी आँखों में कौतुहल था। उसका होने वाला पति १२ वर्षीय नारायण अपनी माता और भाइयों के बीच, कन्या के सामने बैठा था।

छोटे पुरोहित ने कुछ संकेत दिया और अग्नि प्रज्वलित कर दी। पुरोहित जी ने एक ध्रुव नारायण के हाथ में थमा दी और शुभ मुहूर्त आ जाने की चेतावनी स्वरूप बोले- ''सावधान''

''सावधान'' शब्द कानों में पड़ते ही नारायण अचानक चौंक पड़ा- ''सावधान, ठीक सावधान ही तो मुझे होना चाहिए।'' उसे लगा जैसे यह सावधान शब्द कोई आकाशवाणी के रूप में उसके कानों में पड़ा हो।

''हे भगवान, मुझे सावधान हो ही जाना चाहिए'' नारायण ने सोचा। उसने मन ही मन संकल्प किया और इसके पहले कि उपस्थित लोग कुछ समझ पाते, वह एक झटके से उठ खड़ा हुआ और मण्डप के नीचे से भाग खड़ा हुआ।

उसके बाद २४ वर्षों तक नारायण का पता नहीं लग सका।

****

सन् १६०८ में जन्मा नारायण पण्डित सूर्याजी पन्त और कानूबाई का तीसरा पुत्र था। ये लोग जमदग्नि गोत्रीय ऋग्वेदी ब्राह्मण थे और गोदावरी तट पर जम्वा के निवासी थे, नारायण के दो अन्य भाई थे गंगाधर पंत और रवि रामदास पंत। नारायण के यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही सूर्याजी का देहान्त हो गया था।

नारायण घर के किसी कार्य में रुचि नहीं लेता था। अलग बैठा ध्यान मग्न न जाने क्या सोचा करता था। माँ ने कई बार पूछा किन्तु नारायण मुस्कराकर रह गया। एक दिन माँ को क्रोध आ ही गया, डांटकर बोली- ''हे नारायण! तू करता क्या रहता है? बताता क्यों नहीं है। तेरे

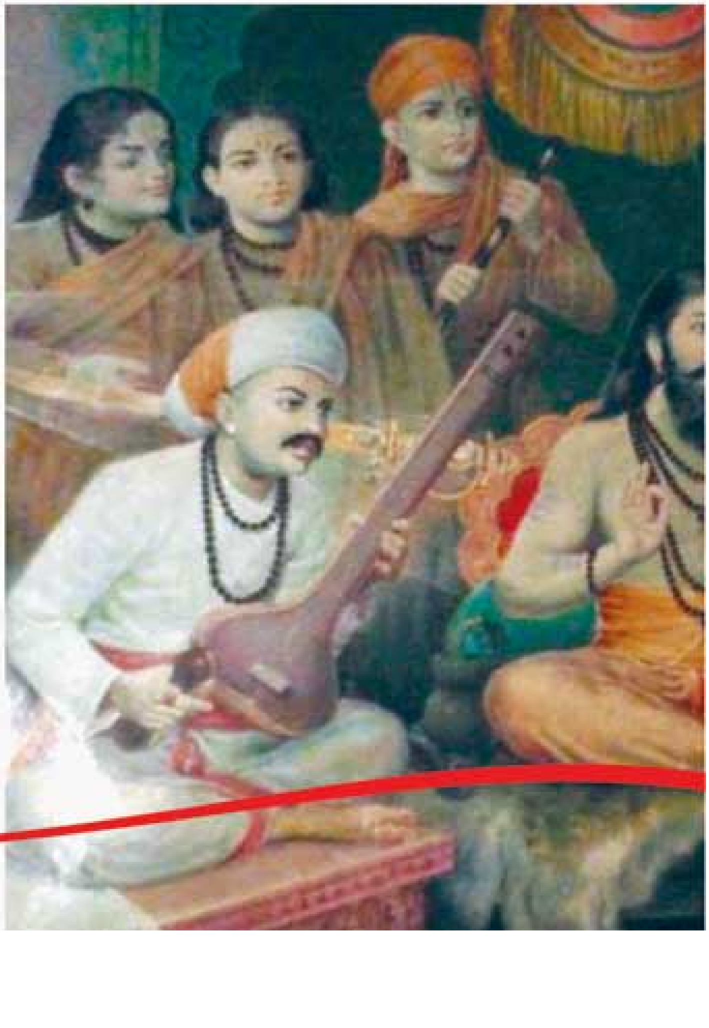

दो भाई खेती-बारी में मेहनत करते हैं खटते हैं और तू हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहता है।''

''माँ मैं ब्रह्माण्ड की बात सोचा करता हूँ।'' बालक नारायण ने कहा।

माँ ने सिर पीट लिया।

नारायण ने एक बार बड़े भाई गंगाधर से संन्यासी होने की बात कही थी तो गंगाधर ने उसे डाँट दिया था।

नारायण के मन में यदि माँ के प्रति ममता न होती तो वह न जाने कबका घर छोड़ गया होता।

किन्तु पुरोहित की चेतावनी 'सावधान' ने उसे बिजली की भांति दिशा प्रदान कर डाली। मण्डप से भाग कर नारायण नासिक के पास सीताहरण स्थल पंचवटी में जा रहा।

गोदावरी की सहायक नदी के पास ताकली पहाड़ी पर वह एक गुफा में रहने लगा। प्रा:त से मध्याह्न तक कमर तक जल के अन्दर खड़े होकर भगवान के नाम का जाप करता। १२ वर्ष की कठोर तपस्या के बाद नारायण को भगवान ने राम रूप में दर्शन दिए और वरदान दिया और

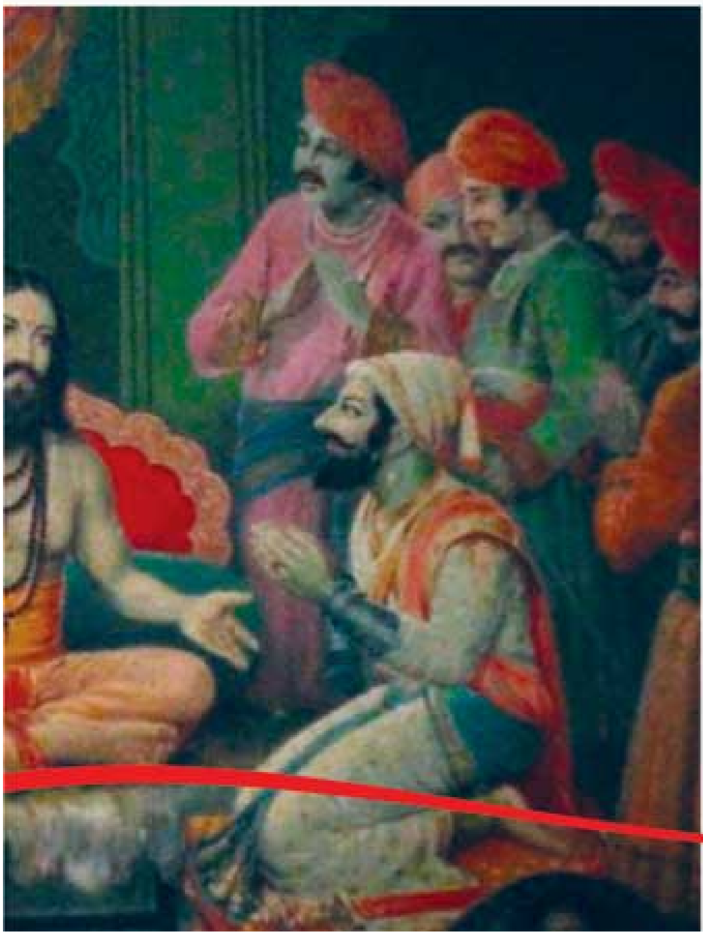

इसके बाद से नारायण ने रामदास नाम ग्रहण कर लिया और मधुकरी वृत्ति अपना ली। अलग-अलग घरों से रोटी मांग कर खाते और भगवद्भजन में लीन हो जाते।

विट्ठल सम्प्रदाय के अन्यान्य संतों के विपरीत, जो मात्र धर्मोत्थान के हेतु ही प्रयत्नशील रहते आये थे, रामदास स्वामी अपने में निराले थे। उन्होंन अनगिनत शिष्यों की परम्परा चलाई और धर्म के साथ देश के राजनीतिक, सामाजिक स्थिति के सुधार पर ध्यान न दिया। विदेशी सत्ता के निष्कासन का प्रश्न उन्होंने उठाया। उन्होंने जनता से सीधा सम्पर्क किया ओर उससे उसी की भाषा में बात की। परिणामतः वे अन्य संतों की अपेक्षा लोगों के और भी अधिक निकट पहुँचने में सफल हुए।

वे यथार्थवादी संत थे और धार्मिक पतन रोकने का भागीरथ प्रयत्न उन्होंने किया। व्यक्ति को सुधारने के पहले धर्म में स्वयं सुधार की बात की।

उनके शिष्य अनेक स्थानों पर जैसे करहड़ शाहपुर, भीरन चाफल, शिरगाँव मसूर आदि में फैले थे और वे भी लोगों को शिष्य बनाने लगे, समर्थ रामदास ने अनेक स्थानों पर मंदिर और मठ बनाकर मृतप्राय हिन्दू जाति में उत्साह भर दिया। पुरुष-स्त्री, बाल, वृद्ध सभी उत्साह से उनके आसपास एकत्र होने लगे। उन सभी को भगवान में अटूट श्रद्धा और समर्थ गुरु रामदास के असीम आस्था थी।

स्वामी जी ने शिरगाँव और चाफल में बड़े-बड़े मठ बनवाये। क्षेमागाँव के मठ पर उन्होंने उद्धव को आसीन किया अपने शिष्य कलयाण और उसकी मात तथा एक मित्र दत्तात्रेय को शिरगांव मठ का कार्य सौंपा। उन्होंने इस प्रकार ११ मठ खोले।

महाराज शिवाजी भी इसी उद्देश्य को लेकर चले थे अतः दोनों का मिलन अवश्यम्भावी ही था। और संत तुकाराम के आदेश पर शिवाजी समर्थ गुरु रामदास ने दर्शन को आये और उन्हें लगा जैसे स्वामी जी के रूप में उन्हें आध्यात्मिक गुरु मिल गया हो।

दोनों ही चतुर थे, कुशल थे और जन भावना ग्रहण

करने की दोनों में अपरिमित क्षमता थी दोनों ही ने महाराष्ट्र को आत्याचारी के पंजों से मुक्त कराने का दृढ़ निश्चय कर लिया समाज में घर कर गये भौतिकवाद पर समर्थ रामदास बहुत दुखी थे, राजनीतिक असुरक्षा पर वे चितिंत थे। समाज के सभी स्तरों पर स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार और ढोंगी धर्मत्माओं के बाहुल्य और जनता की उदासीनता पर वे व्याकुल थे।

वे कहते थे– ''एक साधु को चाहिए कि वह लोगों मे जागृति पैदा करे किन्तु उनसे रहे दूर–दूर ही। उसे सभी की सहायता तो करनी चाहिए किन्तु स्वयं भी भजन, पूजन और ध्यान करना चाहिए।

१६४७ में स्वामी जी ने अंगपुर के निकट कृष्ण नदी तट पर में भगवान राम की एक मूर्ति पायी और उसे चन्दाला में प्रतिष्ठित कराया।

मठ को अपने शिष्य दिवाकर को सौंप कर स्वामी जी उसी वर्ष आषाढ़ में कल्याण, अक्का और अनल स्वामी के साथ पंढरपुर गये। वहां वे संत तुकाराम से उनके देहावसान से एक वर्ष पूर्व मिले थे। वहां से वे शिवधारा चले गये जहाँ उन्होंने दासबोध और अभंगों की रचना की थी।

उसके बाद वे जाग लौट आये। कुछ लोगों के अनुसार वे पली में रहे थे।

१६५५ में शिवाजी महाराज ने अपना सारा राज्य समर्थ स्वामी रामदास को अर्पित कर दिया। स्वामी जी ने उसे लौटा दिया और कहा मेरे प्रतिनिधि के रूप में राज्य व्यवस्था तुम्हीं चलाते रहो। इसी वर्ष वे अपनी मरणासन्न माता के दर्शनों को जम्वा आये थे।

समर्थ स्वामी रामदास और शिवाजी एक ऐसी जोड़ी थी जो लोगों के उद्धार के लिए कृतसंकल्प थे, एक सैनिक, नेता और राजनीतिज्ञ था, दूसरा कुशल परामर्श दाता।

१६६१ में शिवाजी ने प्रतापगढ़ दुर्ग का निर्माण कराने के बाद स्वामी रामदास के करकमलों से वहाँ तुलजा भवानी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करायी जो माँ दुर्गा का ही एक रूप मानी जाती थीं। स्वामी जी ने भवानी के सामने शिवाजी के कल्याण और दुष्टों के दलन हेतु अनुष्ठान किया।

जिन दिनों शिवाजी सज्जनगढ़ का निर्माण कर रहे थे गर्व से उनका सीना फूल रहा था कि मैं इतने लोगों को रोजी दे रहा हूँ। स्वामी जी ने शिवाजी का भाव समझ लिया और आकर एक पत्थर उठाया और उसे दीवाल पर दे मारा पत्थर दो टुकड़े हो गया और उसके भीतर से एक जीवित मेंढक कूदकर भाग गया।

शिवाजी स्तम्भित रह गये और तुरंत स्वामी जी का संकेत समझ गए। यदि भगवान उस पत्थर में बन्द मेंढक को जीवनदान दे सकते हैं तो शिवाजी की क्या बिसात है।

स्वामी का समझाने का अपना ही ढंग था। राजा भगवान का अनुचर है और उसके आदेशों का पालन करता है। शिवाजी ने अहंकार त्याग दिया और जब स्वामी जी का उद्देश्य पूरा हो गया तो उन्हें अतीव संतोष हुआ।

शिवाजी के मन में अपने गुरु के प्रति असीम प्रेम और श्रद्धा थी। शिवाजी ने एक बार एक पत्र में स्वामी जी को लिखा था।

''धर्म संस्थापना, भगवद्भक्ति और जनकष्ट दूर करने के मार्ग में, उनके कष्ट दूर करने के प्रयत्नों में, स्वयं को शांति देने में मुझे इस कर्तव्य के द्वारा संतोष मिलेगा, ऐसा आप ने कहा था। आपने यह भी कहा था कि जो कुछ मैं सच्चे मन से करना चाहूँगा उसमें मुझे सफलता मिलेगी।''

१६७४ में शिवाजी जी का राज्यारोहण हुआ तब वे सज्जनगढ़ में स्वामी जी के पास ४५ दिन रहे थे। १६७८ में स्वामी जी ने तंजोर से सीता राम की नई मूर्तियाँ मंगवाई और उन्हें डोमागाँम कण्ठ में प्रतिस्थापित कराया १६७९ में शिवाजी ने स्वामी जी से अंतिम भेंट की थी। तब स्वामी जी ने कहा था ''शिव तेरा कार्य पूरा हो गया है और अब शीघ्र ही तू जीवनमुक्त हो जाएगा।

स्वामी जी ने कितना ठीक कहा था– उसी वर्ष चार महीने के बाद महाराज शिवाजी का तिरोधान हुआ।

आलेख

ऋचा अग्रहरि

संत घासीदास

अखिल मानव की कल्याण की कामना से महान आदर्श को अपने जीवन में मूर्त रूप बनाकर अवतीर्ण होने वाले संत गुरु घासीदास जी के समय देश में छुआछूत, ऊँच-नीच, सवर्ण-अवर्ण का भेदभाव व्याप्त था। इन सब को दूर करने के लिए एक क्रांतिकारी युग पुरुष की आवश्यकता थी, जो इस क्षेत्र को प्रकाश में लाकर आध्यात्मिक जीवन से उन्नत कर सुसंस्कृत समाज में परिवर्तित कर सके। गुरु घासीदास जी ने इस कमी को पूरा किया। गुरु घासीदास जी का जन्म बलौदा बाजार जिले के ग्राम गिरोदपुरी ग्राम में १८ दिसम्बर सन १७५६ को पूर्णिमा के दिन ब्राम्ह मुहूर्त में ४ बजे हुआ। उनके पिता का नाम श्री महंगूदास और माता का नाम श्रीमती अमरौतिन बाई थी। गुरु घासीदास जी अत्यंत सुंदर और कुशाग्र बुद्धि के थे। छोटी से छोटी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक घटना से उनके मन में अनेक सवाल उठते थे। वे जटिल प्रश्नों के समाधान हेतु हमेशा विचारमग्न रहते, चिंतन करते रहते, किन्तु हल नहीं निकाल पाते थे। उनके विरक्तता भरे प्रश्नों को उनके मन से हटाने के लिए वे (पिता) अपने साथ कृषि कार्य में व्यस्त रखना चाहते थे। किन्तु वहाँ भी वे ऐसे प्रश्न करते जिसे सुनकर उनके पिता निरुत्तर हो स्तब्ध रह जाते थे। बालक घासीदास अपनी समझ एवं प्रवृत्ति से पाँच काठा धान को पाँच एकड़ में बोकर, भारी फसल लेकर, भटा के पौधे में मिर्च फलाकर (जीन्स विज्ञान के प्रयोग से) सबको चमत्कृत कर दिया। महंगूदास, गुरु घासीदास की तीव्र बुद्धि को भाँपकर उन्हें मानकोनी ग्राम की निजी शाला में दाखिला दिलाना चाहा किन्तु जाति भेद ने असफल कर दिया। इस घटना के बाद गुरु घासीदास जंगल में जाकर चिंतन करने लगे इस प्रकार गुरु घासीदास जी ने विषमताओं में तीव्र आँधी में अत्याचार रूपी धूल कणों के तीव्र कष्टों को सहते हुए युवा अवस्था में पदार्पण किया। गुरु घासीदास जी के चिंतन मनन से भयभीत होकर महँगूदास ने उनका विवाह सफुरा नामक सुकन्या से करा दिया। इससे घासीदास के चिंतन में कुछ बाधा अवश्य पड़ने लगी। विवाह के बाद उनके चार बच्चे हुए बड़े पुत्र अमरदास का अपहरण, पिता की मृत्यु, भाइयों के अलग होने आदि घटनाओं से उनके मन में वैराग्य की तेज लहर आई और उन्हें बहाकर ले गई कहते हैं कि घरेलू घटना को दैवीय प्रकोप मानकर गाँव वाले उन्हें अपने साथ शांति हेतु जगन्नाथपुरी ले जा रहे थे। सारंगढ़ के जंगलों को पार करते समय अचानक वे साथियों को छोड़कर कहीं चले गए। छः माह के बाद उनका पता चला। वे छाता पहाड़ के ऊपर बैठे हुए थे। छाता पहाड़ के बाद वे स्थान परिवर्तन करके औंरा-धौंरा पेड़ तले तप करने लगे। अंत में उन्हें वहाँ आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई। उसके बाद उन्हें अपने सारे प्रश्नों के उत्तर मिलने लगे। आत्मज्ञान से सतनाम की प्राप्ति हुई। भंडारपुरी से सतगुरु द्वारा सतनाम का बृहद प्रचार सतनाम का हुआ। उन्होंने पूरे छत्तीसगढ़ की यात्रा की। सतनाम का अर्थ सत-आत्मा को कहते हैं। सतनाम उसका धर्म है आत्मा के धर्मानुसार अपने कार्यो को करना सतनाम है। गुरु घासीराम जी ने ५ संदेश व ७ उपसंदेश दिए।

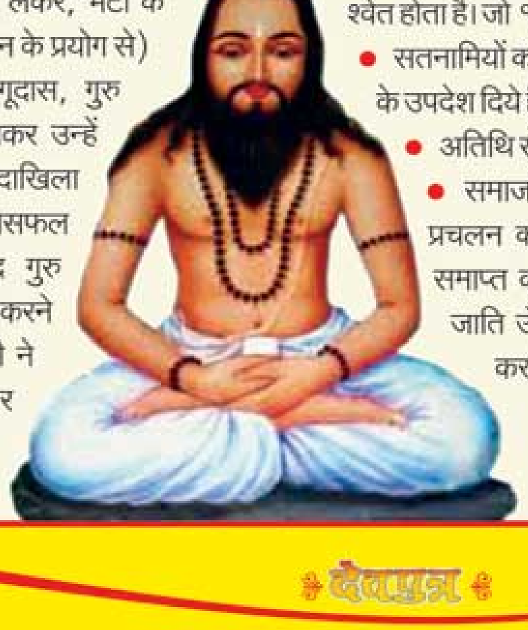

गुरु घासीदास जी के कार्य -

- गुरु घासीदास जी ने आत्मा के स्वभाव व गुण के अनुसार जिस समाज का ज्ञान कराया उसे अन्य लोगों ने सतनाम कह दिया।
- जैतखाम- यह २१ मी. लंबाई का सरई का खंभा होता है जो गुरु घासीदास के उपदेशों का प्रतीक है। उनका ध्वज श्वेत होता है। जो १८ दिसम्बर को फहराया जाता है।
- सतनामियों को ग्राम के पूर्व या उत्तर में निवास करने के उपदेश दिये हैं।
- अतिथि सेवा की विशेष पहचान बताई गई है।
- समाज में चरण अमृत देने लेने की प्रथा का प्रचलन करके गुरु जी ने मानव के भेद को समाप्त कर दिया। इस प्रकार गुरु घासीराम जाति ऊँच नीच आदि के भेदभाव समाप्त कर दिया।

- बिर्रा (छ.ग.)

ऐसे करें खरीददारी

चित्रकथा-**संकेत गोस्वामी**

ग्राहक यानी उपभोक्ता..
उपभोक्ता.. मतलब?
चलो आज मैं तुम्हें इस बारे में जरूरी कुछ बातें बताता हूं..
उपभोक्ता या ग्राहक वो होता है जो कोई वस्तु, सामान या सेवा, पैसा देकर खरीदता है..
क्योंकि लोग मेहनत से पैसा कमाते हैं. वे चाहते हैं कि उनके पैसे के बदले उन्हें एकदम सही चीज मिले और यह उनका अधिकार भी है.
क्या तुमने देख लिया तुम अपने पैसे से सही चीजें खरीदकर लाई हो..?
वो कैसे देखते हैं?.. हमारी चीजें नई ही तो हैं.
ऐसे नहीं, अगर तुम समझदार और जागरूक ग्राहक बनना चाहती हो तो जो भी चीज खरीदो जांच परख कर लो.. अपनी चीजें मुझे दो मैं समझाता हूं..
ओह रेशा., बेटा तुम्हारे बिस्कुट तो चार महीने पुराने हैं. तुमने नहीं देखा इस पर लिखा भी है, पैक करने पर तीन महीने तक बेहतर... यानी ये अब उपयोग लायक नहीं..
ORIGINAL GLUCOSE
CREAM
PKD.- 09/16
MRP.-08.00
(BEST BEFORE 3 MONTHS FR
BIS UTE

अच्छा रिंकू तुम्हारी बोटल कितने में आई?
MRP.28.00 600ML.
32 रूपयों में..
ओह! तुमने भी गलती कर दी इसमें एम. आर. पी. केवल 28 रुपये लिखा है, तुमने पांच रुपये ज्यादा दे दिए..
बिस्कुट खाने लायक नहीं और बोटल महंगी खरीद ली...
ओह स्केच पेन भी सूखे हैं..
चलो कोई बात नहीं, इन चीजों का बिल तो लिया है चलकर उस दुकानदार से बात करते हैं
बिल तो हमने लिया ही नहीं.
ओह तो तुमने खरीददारी, समझदारी के साथ बिल्कुल नहीं की..
बच्चों, आप लोग भी जान लो आपको खरीददारी करते समय जागरुक और चौकन्ना रहना होता है.
'आप कोई भी चीज खरीदें सबसे पहले उसकी मेन्यूफेक्चर तारीख यानी निमाणि की तारीख अवश्य देखें'
'अगर सामग्री पैकेट या बोटल में बंद है तो उसे पैक कब किया गया और वह पैक बंद कब तक बेहतर रहेगी. यह देख लें., दिखने से ही कोई चीज नई नहीं होती.'
JAM
CHIPS
STAR
CREAM BISCUTE

'फिर एम. आर. पी. यानी 'मैक्सिमम रिटेल प्राइस' यानी अधिकतम खुदरा मूल्य देखें. अंकित मूल्य से अधिक कभी ना दें क्योंकि यह कम्पनी की ओर से 'अधिकतम' बताया गया है.'
MRP. Rs. 8.00 (inc. all taxes)
PKD 01-16
B.No.
'खाने-पीने की चीजों के पैक पर एक निशान तुम्हें अक्सर देखने को मिलेगा. हरे चौखाने के बीच हरा गोला. यह इस बात का प्रतीक है कि यह चीज़ पूर्णतः शाकाहारी है. लाल चौखाने में लाल गोला मांसाहारी खाद्य का प्रतीक है.'
'और फिर सबसे जरुरी याद रखने वाली आखिरी बात है खरीदी हुई सामग्री का बिल लेना.'
'जब भी आप कुछ खरीदें अंकित मूल्य पर भी मोल भाव करें और रुपये कम कराने की कोशिश करें क्योंकि बेचने वाले को इसमें भी अच्छा कमीशन मिलता है.'
0.00
'ताकि वस्तु या सामान के सावधानी बरतने के बाद भी दोषपूर्ण निकल जाने पर बिल दिखाकर दुकानदार से बात की जा सके और जरूरत पड़ने पर उसे बदलाया या ठीक करवाया जा सके.'
RAMA B.&CO.
इतना सब तो हमने सोचा ही नहीं..
तभी तो बताने की जरूरत पड़ी बच्चों.
पर हमारे खर्चे रुपये तो डूब गए.
कोई बात नहीं मैं दुकानदार से बात करूंगा..पर अब तो ध्यान रखोगे?
हां बिल्कुल. इतना सब बताने के लिए थैंक्यू चाचा..
नो मेंशन.
तो दोस्तों, आप भी खरीददारी करते समय ये सारी बातें याद रखना. हमारी तरह लापरवाही मत करना..
समाप्त

।। रामानुजन जयंतीः २२ दिसम्बर ।।

महान गणितज्ञ डॉ. रामानुजन

आलेख

डॉ. सत्यकाम पहारिया

आइए, आपको एक ऐसे महान गणितज्ञ का परिचय कराते हैं जिन्होंने विश्वभर में भारत का नाम ऊँचा किया और जो जीवनभर गणित विषय पर खोज करते रहे।

२२ दिसम्बर १८८७ को जन्मे रामानुजन ने सात-आठ साल की उम्र में विद्यालय में प्रवेश लिया था। रामानुजन अब सबकी तरह ३-४ वर्ष की उम्र में विद्यालय में भर्ती नहीं हुए थे क्योंकि इनके पिताजी के पास पैसों की बहुत कमी थी और विद्यालय बहुत दूर थे। रामानुजन मद्रास राज्य के तंजोर नगर के पास ईरोड़ नामक स्थान पर रहते थे। मद्रास विश्वविद्यालय से मैट्रीकुलेशन में उन्होंने गणित में सबसे अधिक अंक प्राप्त किए थे। बच्चो! आप भी इतना पढ़ें कि रामानुजम की तरह आपके भी सबसे अधिक अंक आएं। क्यों पढ़ेंगे न अब आप?

लेकिन बच्चो! रामानुजन के साथ एक खराबी भी रही कि वे बराबर गणित ही पढ़ते रहते थे। इससे वे अन्य विषयों में कमजोर हो गए और फिर वे आगे नहीं बढ़ सके। परन्तु महान लोगों के लिए तो भगवान भी सहायता करते है न? रामानुजन ने भी हार नहीं मानी और वे प्राइवेट पढ़ते ही रहे और ट्यूशन कर अपना परिवार चलाते रहे।

पच्चीस वर्ष की आयु में उन्होंने एक नौकरी की थी। नौकरी करने के साथ उनका गणित में आकर्षण कम न हुआ और बड़े कठिन-कठिन गणित के प्रश्नों का हल शीघ्र निकालने लगे। इनके आफिस के एक अंग्रेज आफिसर ने इनके गणित के प्रश्नों को देखकर बहुत प्रसन्नता प्रकट की।

उसी अंग्रेज के प्रयत्न से यह इंग्लैण्ड पढ़ने जा सके।

रामानुजन को विदेश का खान-पान, रहन-सहन, वेष-भूषा बिल्कुल पसन्द नहीं थी। वे जब विदेश में रहे, गणित विषय पर खोज करते रहे तब तक अपने हाथ से ही खाना बनाते रहे और सच्चे भारतीय की तरह रहे।

गणित जैसे कठिन विषय पर वे बहुत अध्ययन मनन करते रहे। उन्होंने गणित के बहुत से नये-नये सूत्र और सिद्धान्त निकाले जो अभी तक विश्व में किसी ने नहीं निकाले थे। उनके सिद्धांतों और सूत्रों को ''राजर्स रामानुजन आईडेंटीटीज'' के नाम से पुकारते हैं। उनके समान गणित विषय में दूसरा कोई विद्वान नहीं था। उन्होंने महान गणितज्ञ के नाते अपना नाम किया जिससे देश का मस्तक भी ऊँचा हुआ।

डॉ. रामानुजन को १९१८ में इंग्लैण्ड की रायल सोसायटी में सर्वसम्मति से ''फेलो'' चुना। वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के भी ''फैलो'' मनोनीत हुए। गणित क्षेत्र में उनकी महान सेवा के लिए दुनिया भर में याद किए जाते हैं। डॉ. रामानुजन आयंगर ही आधुनिक युग के पहले भारतीय हैं जिन्हें गणित विषय पर इतना सम्मान मिला। देश को उन पर गर्व है।

अधिक अध्ययन करते रहने से डॉ. रामानुजन जल्द ही बीमार पड़ गए। भारत लौटने पर वे २६ अप्रैल १९२० ई. को ३३ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवासी हो गये।

- कानपुर (उ.प्र.)

॥ मदनमोहन मालवीय जयंतीः २५ दिसम्बर ॥

हिन्दू धर्म के पुरोधा
मदन मोहन मालवीय

आलेख
शंतनु र. शेण्डे

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम में 'हिन्दू' शब्द एवं उस समय अंग्रेजी शासन रहते हुए बनारस हिन्दू एक्ट २९१५ पारित करा लेना महामना मालवीय जी के कट्टर हिन्दुत्व का परिचय है। उन्होंने प्रयाग हिन्दू समाज संस्था का कार्य किया। मध्य भारत हिन्दू समाज परिषद् इलाहाबाद में हुई उस की तैयारी उन्होंने की। सनातन धर्म महासभा की स्थापना की। हिन्दू महासभा के वे अग्रज नेता थे। दलितोद्धार की कल्पना मंदिर में प्रवेश, देवदर्शन, कुएँ पर पानी भरना, छात्रों को कक्षाओं में सब के साथ बिठाना, अस्पृश्यता न मानना इससे उनकी हिन्दू धर्म पर की श्रद्धा बढेगी, धर्म कार्य और देश कार्य होगा। ३० दिसम्बर १९३९ में कोलकाता में गंगाजी के किनारे पर अस्पृश्यों को दीक्षा देने के कार्य में उन पर पत्थर कीचड़ फेंका गया फिर भी वे अडिग रहे। उन पर वहाँ के पंडित राजेश्वर शास्त्री ने तीन आरोप लगाए। लेकिन जब पंडित मालवीय जी उत्तर देने खड़े हो गए तो जनता ने उन का जयजयकार किया और पंडित जी ने भी उन्हें धर्मग्रंथों से सैकड़ों उदाहरण देकर विरोध का पूर्णतः खण्डन किया और सभा जीत ली। गिराये हुए शामियाने को पुनः खड़ा कर ४०० लोगों को दीक्षा दी।

आदर्श हिन्दू ने जो व्यवहार करना चाहिए, उसका आचरण वे करते थे। उनका परिधान धोती, कुरता और पगड़ी साथ माथेपर चंदन का तिलक यह आदर्श जीवन भर सबके सामने रखा। हिन्दी राष्ट्रभाषा का आग्रह, गोरक्षा के आंदोलन में अग्रसर, ग्राम संगठन, ग्रामोद्धार, शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम् के लिए व्यायाम का आग्रह, गंगापूजन, धर्मरक्षा हेतु धर्म शिक्षा, काशी विश्वनाथ के प्रति असीम श्रद्धा और भक्ति आदि हिन्दुत्व का पूरा आदर्श जीवन था।

स्व. राजेन्द्र प्रसाद, प्रथम राष्ट्राध्यक्ष ने पंडित जी का परिचय कराते समय उनका पंडित महामना ऐसा उल्लेख किया। तब से उन्हें महामना संबोधन पड़ा। महात्मा गांधी जी ने उन्हें 'धर्मात्मा' उपाधि दी थी। साहित्य सम्राट तात्या साहेब केलकर ने एक बार कहा था– यदि किसी ने मुझे पूछा हिन्दुत्व का आदर्श कौन ? तो मैं एक ही व्यक्ति का नाम आदर्श के रूप में लूँगा और वह व्यक्ति है पंडित मदनमोहन मालवीय जी।

अब पंडित, महामना, धर्मात्मा और भारत रत्न मदन मोहन मालवीय जी अपने एक अद्वितीय ''बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय'' की स्थापना से अजरामर, श्रद्धा के योग्य एवं हिन्दुत्व के आदर्श सदैव शिक्षाविद् के रूप में जाने जायेंगे।

–दिल्ली

मेरी बिल्ली

● डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

कुछ सफेद कुछ भूरी-काली,
मेरी बिल्ली है मतवाली।
चाल-ढाल है उसकी न्यारी,
लगती मुझे सदा ही प्यारी।
दूध-दही सब चट कर जाती,
और हमें ही आँख दिखाती।
फिर भी कभी न पीटी जाती,
प्यार-दुलार सभी का पाती।
अक्सर मेरे ही सिरहाने,
बैठ आँख लगती झपकाने।
डाँटो तो कर म्याऊँ-म्याऊँ,
कहती बोल कहाँ मैं जाऊँ।
घर में चूहे कभी न आते,
जाने किस बिल में छिप जाते।

– भैरवाँ (उत्तराखण्ड)

ढोंगी बिल्ली

● डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

ढोंगी बिल्ली पढ़ा रही थी,
सीखो बच्चो अच्छे काम।
सत्य अहिंसा दया धर्म में,
सदा लगाना अपना ध्यान।।

तुमसे दुर्बल जो भी होवें,
उसको दुःख मत पहुँचाना।
सदा सहारा देना उनको,
छिपकर घात न कर जाना।।

बिल से तब ही चूहा निकला,
सारी शिक्षा भूल गयी।
ताका मौका घात लगाई,
दांत में चूहा दाब गयी।।

पूंछ हिलाकर किया इशारा,
कक्षा आज नहीं लूंगी।
खेलो बच्चो बाहर जाकर,
पूरा कल ही पाठ करूँगी।।

– संगरिया (राज.)

बिल्लो रानी

डॉ. आर.पी. सारस्वत

बिल्लो रानी शहर आ गई
आकर के पछताती
घर-घर जाली के दरवाजे
अंदर घुस ना पाती
बिल्लो अब तो रोज सबेरे
चुपके छत पर जाती
एक कबूतर चतुराई से
झट से चट कर आती
पूरे दिन अब तो मस्ती से
लेती फिरे जम्हाई
भूख मिटाने को उसने यह
नई राह अपनाई॥

– सहारनपुर (उ.प्र.)

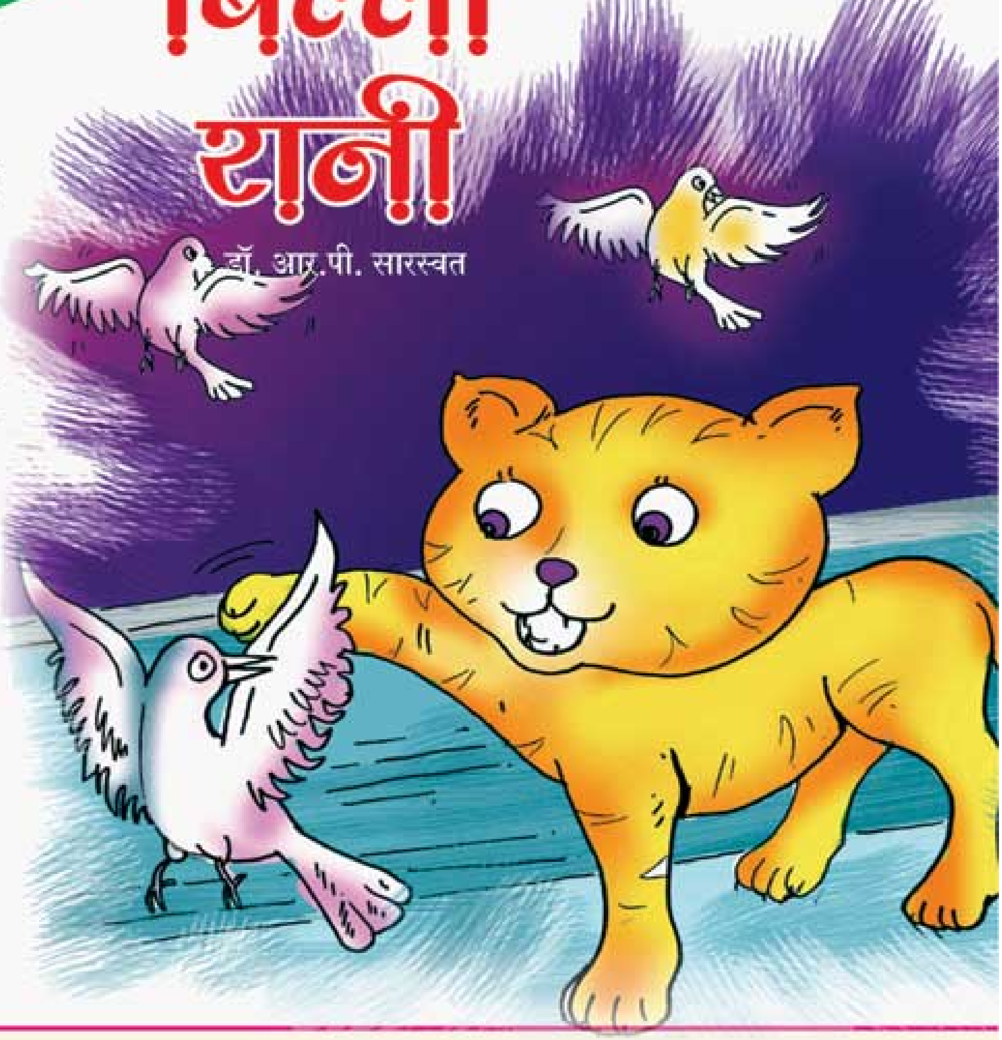

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'बिल्ली' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

पश्चाताप

कहानी

तारादत्त जोशी

करन अपने मातापिता की इकलौती संतान था। उसके मातापिता उसकी सभी आवश्यकताएँ पूरी करते लेकिन वह फिर भी संतुष्ट नहीं रहता था। रोज उसकी कोई न कोई मांग रहती थी। उसकी इच्छा पूरी नहीं होने पर वह घर का सामान पटक देता ओर जोर–जोर से रोने लगता।

कक्षा में भी वह सबसे उद्दण्ड बालक था। वह कक्षा के सभी बच्चों को परेशान करता और छोटी–छोटी बातों पर झगड़ता रहता था। उसका गृहकार्य कभी पूरा नहीं होता। कक्षा प्रतिनिधि राधा रोज उसकी शिकायत गुरुजी से करती, लेकिन गुरुजी की फटकार का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। धीरे–धीरे गुरुजी ने भी उसकी शिकायत सुनना बंद कर दी।

दीनू भी उसकी कक्षा का छात्र था। उसके माता–पिता गरीब थे। उसकी कापी किताब व विद्यालय गणवेश का प्रबंध भी बड़ी कठिनाई से होता था। दीनू पढ़ाई में तेज था। वह नियमित रूप से अपना गृहकार्य करता था और अपने साथियों की सहायता भी करता था। कक्षा के सभी बच्चे और गुरुजी उसे अच्छा मानते थे। जिस कारण करन उससे चिढ़ता था और उसे परेशान करता रहता था।

एक दिन गुरुजी ने करन को चेताया कि अगर कल को उसको गृहकार्य पूरा नहीं होगा तो उसे मासिक परीक्षा में नहीं बैठने दिया जाएगा। करन अपना छूटा हुआ कार्य पूरा करने के लिए साथियों से कॉपी मांगने लगा। किन्तु कक्षा के किसी भी बच्चे ने उसे अपनी कॉपी नहीं दी। अंत में वह दीनू के पास गया। दीनू ने उसे अपनी कॉपी दे दी और कहा कि कल को वह कॉपी अवश्य लौटा दे।

अगले दिन विद्यालय आने पर जब दीनू ने करन से कॉपी मांगी तो करन कॉपी घर भूलने का बहाना बनाने लगा। दूसरे दिन भी वह कॉपी नहीं लाया। इस तरह पाँच दिन बीत गए। आज शनिवार था, कॉपी जँचवाने का दिन। दीपू ने विद्यालय आते ही करन से अपनी कॉपी मांगी तो वह लड़ने लगा और शिकायत करने पर देख लेने की धमकी देने लगा। दीनू बेचारा मन मार कर रह गया।

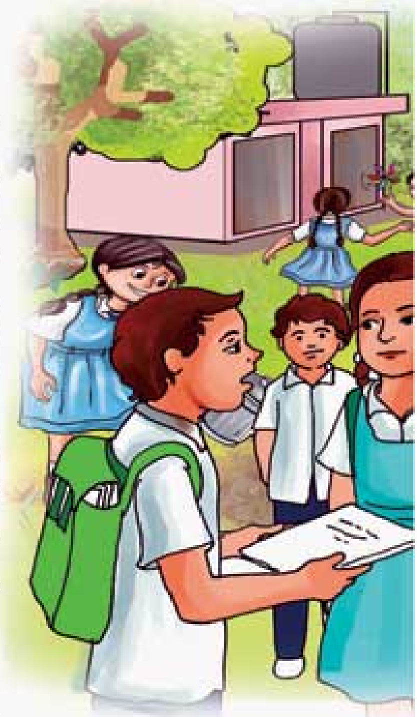

गुरुजी के कक्षा में आने पर सारे बच्चों ने अपनी–अपनी कॉपी मेज में जमा कर दी और गुरुजी एक–एक बच्चे को बुलाकर कॉपी जाँचने लगे। करन का क्रम आया, आज उसका काम पूरा था। गुरुजी ने उसे शाबासी दी। किन्तु आज दीनू की कॉपी न देखकर गुरुजी को आश्चर्य हुआ। करण पूछने पर दीनू खड़ा हो गया और उसने सिर झुका लिया। सारे बच्चे हँसने लगे। करन अपनी धूर्तता पर खूब हँस रहा था। गुरुजी बोले– ''कोई बात नहीं दीनू, अगले दिन दिखा देना।'' छुट्टी होने पर सब बच्चे घर को जाने लगे और करन भी हँसते हुए विद्यालय से बाहर निकल गया। राधा और दीनू प्रतिदिन साथ–साथ घर जाते थे। राधा ने रास्ते में दीनू से पूछा– ''तुम्हारा गृहकार्य तो प्रतिदिन पूरा रहता था, आज क्या बात हुई?'' दीनू कुछ न बोला। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। राधा फिर जोर देकर बोली– ''जब कुछ बताओगे तभी तो समाधान निकलेगा।'' दीनू ने बताया– ''करन मेरी कॉपी मांगकर ले गया था, अब लौटा नहीं रहा है और कह रहा है कि शिकायत करोगे तो देख लूँगा।'' मैं नई कापी भी नहीं खरीद सकता हूँ। अब मैं क्या करूँ...?

दूसरे दिन रविवार था। राधा को दीनू की चिंता हो रही थी। आखिर दीनू क्या करेगा? फिर उसके मन में एक विचार आया। उसने अपनी सभी कॉपियों के बीच से दो–दो पन्ने निकाल कर एक साथ लगाया और उसके बाहर अपनी पुरानी कॉपी का आवरण लगा दिया। यह एक सुंदर कॉपी बन गई, किन्तु यह बहुत पतली थी।

दूसरे दिन विद्यालय आकर राधा ने फिर सब साथियों

से दो-दो पन्ने मांगे। सबने खुशी से पन्ने दे दिए। लेकिन करन ने अपनी कॉपी के पन्ने नहीं दिये। छुट्टी के बाद घर जाते समय राधा ने अपने बस्ते से कापी निकाल कर दीनू को दी। दीनू बहुत प्रसन्न हुआ। राधा बोली- ''दीनू यह बात किसी को मत बताना।'' दीनू ने देर रात तक काम करके चार दिन में सारा काम पूरा कर दिया।

अगले शनिवार को फिर सभी बच्चों ने अपनी कॉपी जमा की। गुरुजी कॉपी जाँचने लगे। करन का काम पूरा नहीं था। गुरुजी से उसे डांट पिलाई। अंत में दीनू की बारी आई। गुरुजी ने पिछले पन्ने पलट कर दीनू से पूछा- ''तुम्हारा पिछला काम तो जाँचा हुआ है, फिर यह दोबारा क्यों?

दीनू कुछ बोलता, उससे पहले ही राधा बोलने। ''गुरुजी! दीनू की कॉपी इसके भाई ने खराब कर दी। इसके पिता जी गरीब हैं और वह नई कॉपी नहीं खरीद सकता था। यह बात जब करन को पता चली तो उसे दीनू पर दया आ गई। उसने अपनी सभी कॉपियाँ के बीच से पन्ने निकाले और सारे बच्चों से भी दो-दो पन्ने मांगकर दीनू के लिए नई कॉपी बना दी। करन ने बहुत अच्छा काम किया है न, गुरुजी!'' सभी बच्चे आश्चर्य से राधा की ओर देखने लगे।

राधा की बात सुनकर गुरुजी प्रसन्न हो गए। उन्होंने करन को शाबासी दी और सारे बच्चों से करन के लिए ताली बजवाई। लेकिन करन सिर झुकाकर अपनी जगह पर बैठा रहा। घर जाते समय दीनू बोला- ''राधा! कॉपी तो मेरे लिए तुमने बनाई थी, फिर गुरुजी को करन का नाम क्यों बताया?'' देखो दीनू, करन भी हमारा साथी है और मुझे लगता है कि आज के बाद करन पूरी तरह बदल जाएगा। करन के व्यवहार में सुधार आ जाए, इसीलिए मैंने यह सब किया और झूठ भी बोला कि तुम्हारी कॉपी तुम्हारे भाई ने खराब की थी।'' राधा ने उत्तर दिया। दीनू ने राधा को धन्यवाद दिया और बोला, ''राधा! तुम बहुत अच्छी हो।''

आज करन छुट्टी के बाद चुपचाप घर चला गया था। घर में भी वह गुमसुम बैठा रहा। उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था। उसे देखकर माँ को चिंता हुई उन्होंने करन से पूछा कि, किसी से विद्यालय में झगड़ा तो नहीं हुआ? करन चुपचाप माँ से लिपट कर रोने लगा और धीरे-धीरे उसने सारी बात माँ को बता दी। माँ ने करन को समझाया और कहा कि दीनू की कॉपी लौटा देना।

अगले दिन करन दीनू की कॉपी लेकर विद्यालय आया और उसने दीनू व राधा से क्षमा मांगी और दीनू को कॉपी लौटाते हुए बोला- ''मुझे क्षमा कर देना दीनू, मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई है और हाँ राधा! तुमने मेरी आँखें खोल दी है। मैं तुम्हारा यह उपकार जीवन भर नहीं भूलूँगा। अब में कभी गलती नहीं करूँगा और अच्छा इंसान बनने का प्रयास करूँगा।''

अब करन पूरी तरह बदल चुका था। उसका गृहकार्य भी रोज पूरा रहता और वह पढाई में भी मेहनत करने लगा। वार्षिक परीक्षा में करन तृतीय स्थान लेकर उत्तीर्ण हुआ। दीनू और राधा प्रथम और द्वितीय आये। अभिभावक संघ की बैठक में करन की माता जी ने गुरुजी को बताया कि किस प्रकार राधा के प्रयत्न से करन में बदलाव आया।

कुछ समय बाद विद्यालय का वार्षिकोत्सव आया। सभी बच्चों के माता पिता विद्यालय आए थे। बच्चों ने सुंदर कार्यक्रम दिखाए। अंत में पुरस्कार वितरण किया गया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले सभी बच्चों को पुरस्कार मिला। अब बारी उत्कृष्ट छात्र पुरस्कार की। सभी बच्चे उत्सुकता से मंच की ओर देखने लगे। तभी मंच से घोषणा हुई इस वर्ष का उत्कृष्ट छात्र पुरस्कार राधा को दिया जाता है। सारा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। आज राधा, करन और दीनू साथ-साथ घर को गए। तीनों बहुत खुश थे। राधा करन के बदल जाने से खुश थी और करन राधा को उत्कृष्ट छात्र पुरस्कार मिलने से प्रसन्न था। दीनू राधा की सूझ-बूझ और करन के व्यवहार में आए परिवर्तन को देखकर खुश था।

- हरिपुरा (पंजाब)

द्वीप द्वीपान्तरों के देश

स्तंभ
श्रीधर बर्वे

* हमारी पृथ्वी के वर्तमान लगभग दो सौ देशों में से अस्सी प्रतिशत देश महाद्वीपों की मुख्य भूमि पर स्थित हैं। शेष देश आधे द्वीप, एक द्वीप अथवा एकाधिक द्वीपों के समूहों में बसे हुए हैं।

द्वीप-समूहों के देश -

(१) **इण्डोनेसिया** – द्वीप-समूहों के देशों में सबसे बड़ा देश है इण्डोनेसिया। इस देश में साढे तेरह हजार से अधिक छोटे-बड़े द्वीप हैं। जावा, सुमात्रा, सुलावेसी, बाली जैसे महत्वपूर्ण द्वीप इण्डोनेसिया में हैं तो न्यूगिनी, बोर्नियो और तिमोर द्वीपों के आधे-आधे भाग भी हैं।

इण्डोनेसिया हमारा पड़ोसी देश है। निकोबार द्वीपों के अंतिम द्वीप से केवल १०० किलोमीटर दूर इण्डोनेसिया का सुमात्रा द्वीप है।

क्षेत्रफल : १९ लाख ५ हजार वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या : लगभग २४ करोड़
राजधानी : जकार्त्ता

इण्डोनेसिया १९४५ में आजाद होने के पूर्व डच (नीदरलैण्ड्स) का उपनिवेश था तथा ईस्टइण्डीज कहलाता था।

(२) **फिलीपीन्स** – विश्व का दूसरा बड़ा द्वीप-समूह देश है फिलीपीन्स, जिसमें ७१०० से अधिक छोटे बड़े द्वीप हैं। बड़े द्वीप केवल दो हैं, उत्तर में 'लुजॉन' तथा दक्षिण में 'मिन्दानाव'। इन दो द्वीपों में फिलीपीन्स के भूक्षेत्र का ८५ प्रतिशत भाग समाहित है।

१५२१ में स्पेनी अन्वेषकों ने इस द्वीप समूह को खोजा था। १५६५ में स्पेन ने इन द्वीपों पर अपना राज्य कायम कर लिया था और अपने तत्कालीन राजा फिलीप्स द्वितीय के नाम के आधार पर इन द्वीपों का नामकरण कर १८९८ तक राज्य करते रहे। स्पेन के बाद आधी शताब्दी तक संयुक्त राज्य अमेरिका ने फिलीपीन्स को अपने नियंत्रण में रखकर द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद स्वतंत्र किया।

क्षेत्रफल : लगभग ३ लाख वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या : लगभग १० करोड़
राजधानी : मनीला

(३) **जापान** – विश्व का तीसरा बड़ा द्वीप-समूह देश जापान है जिसमें ६८५२ द्वीप हैं। बड़े-बड़े द्वीप हैं- होंशू, होक्कैडो, क्युशू और शिकोकू। शेष द्वीप छोटे-छोटे हैं।

किंवदन्तियों के अनुसार ईसा पूर्व ६६० में सूर्योदय के इस देश की स्थापना हुई थी। आधुनिक जापान का एकीकरण १८६८ में मेदूजी सम्राट ने किया। १८७१ तक जापान एक आत्मकेन्द्रित देश था। इसके बाद ही उसने अपने द्वार बाहरी देशों के लिये खोले और आधुनिकता का मार्ग अपनाया। १९०५ में जापान ने युद्ध में रूस को पराजित कर एशियावासियों के आत्मविश्वास को प्रोत्साहित किया था। द्वितीय महायुद्ध में पराजय तथा परमाणु बमों का शिकार होने के बाद जापान ने अपने पुनर्निर्माण तथा विज्ञान, तकनिकी के साथ के साथ औद्योगिक प्रगति कर पुनः अपनी दक्षता, कर्मठता और

योग्यता को सिद्ध कर दिखाया है।

क्षेत्रफल : ३७७७६५ वर्ग किलोमीटर

जनसंख्या : १३ करोड़ (लगभग)

राजधानी : तोक्यो

(४) **न्यूजीलैण्ड** – द्वीप समूहों में न्यूजीलैण्ड भी एक महत्वपूर्ण देश है जो ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के दक्षिण पूर्व में स्थित है। न्यूजीलैण्ड में दो बड़े द्वीप हैं, जिनके नाम दिशाओं के आधार पर हैं– उत्तरी द्वीप और दक्षिणी द्वीप। उत्तरी द्वीप में पूरे देश की जनसंख्या का ७५ प्रतिशत भाग निवास करता है। दक्षिणी अधिक पहाड़ी और ठण्डा है।

न्यूजीलैण्ड के मूल निवासी 'माओरी' कहलाते हैं। पूरे देश की जनसंख्या में उनका भाग केवल १० प्रतिशत ही रह गया है। ७५ प्रतिशत निवासी ब्रिटिश मूल के हैं।

माओरी शब्द का अर्थ होता है – ''सहज–सामान्य–मनुष्य''। माओरी जन गोरो को पाकेह्वा कहते हैं। और अपने देश को ''आओतिआरोआ'' कहते हैं जिसका अर्थ होता है लम्बे और सफेद बादलों का देश।'' आरम्भ में माओरी लोगों और गोरों के सम्बन्ध बहुत कटु रहे। १८४० की संधि द्वारा देश की भूमि पर माओरियों के अधिकारों को मान्यता दी गई थी, जिसका कुछ पालन १९९४–९५ में आरम्भ हुआ, साथ में माओरी जन गण को भूमि अधिग्रहण की क्षति पूर्ति भी की गई।

क्षेत्रफल : २७१००० वर्ग किलोमीटर

जनसंख्या : ४० लाख

राजधानी : वेलिंगटन

– इन्दौर (म.प्र.)

।। जन्मदिन : २५ दिसम्बर ।।

अटल बिहारी

कविता

आचार्य भगवत् दुबे

राष्ट्र भक्ति की भावना, जिनमें भरी अकूत।
अटल बिहारी राष्ट्र के, हैं सम्पूज्य सपूत।।
जीवन अर्पित कर दिया, अटल राष्ट्र के नाम।
त्याग और बलिदान के, हुए प्रकट परिणाम।।
ओजस्वी वक्ता प्रखर, आकर्षक व्यक्तित्व।
वाणी से झरता सदा, गौरवपूर्ण कवित्व।।
आजीवन क्वांरे रहे, त्यागे भोग–विलास।
सहे राष्ट्रहित आपने, जीवन भर संत्रास।।
चले शांति पथ पर सदा, फैलाया सद्भाव।
हुआ पराजित आपसे, वैमनस्य दुर्भाव।।
तुम प्रधानमंत्री बने, बढ़ा राष्ट्र का मान।
प्रगट पोखरण में हुआ, परमाण्विक विज्ञान।।
हिन्दी सेवी श्रेष्ठ कवि, है बेदाग चरित्र।
अतः विपक्षी भी रहे, सदा आपके मित्र।।
राष्ट्र संघ में जब किया, हिन्दी में उद्घोष।
स्वाभिमान का भर गया, नये सृजन में जोश।।
दिया शत्रु को आपने, मैत्री का पैगाम।
शांति पुजारी आपको, श्रद्धा सहित प्रणाम।।

–जबलपुर (म.प्र.)

जीवाश्म यानी प्राचीन अवशेष

सचित्र विज्ञान चर्चा-
संकेत गोस्वामी

अनेकानेक वर्षों में, पहले के मरे हुए कुछ जानवरों और पौधों के बचे अवशेष ,जीवाश्म कहलाते हैं. इन हजारों लाखों वर्षों के लम्बे समय बाद वे पत्थरों में बदल चुके होते हैं.
ऐसा होने का कारण है इनका कीचड़ में लिपटा रह जाना है. लम्बे समय के अंतराल में यह कीचड़ ही चट्टान में बदल जाते हैं और उनके बीच में जो रह गया था चाहे वो हड्डियां हो, कवच हों या प्राणी, पत्थर में बदल जाते हैं.
ये दबकर रह गए, बंद होकर रह गए, अवशेषों से हम यह जान पाते हैं कि वे प्राणी, पौधे वगैरह कैसे दिखते थे?

समुद्री जीवाश्म-

आमतौर पर घोंघे के आकार के कवच, शैल रूपी जीवाश्म मिलना बेहद सामान्य हैं. ये वे हैं जो लाखों वर्षों पहले समुद्र में रहते थे और आकस्मिक आपदा के कारण मर गए थे, दफन होकर रह गए थे. ये आज के ऑक्टोपस के सम्बंधी थे और इनमें से कुछ एक मीटर तक बड़े कवच या शैल में रहते थे.

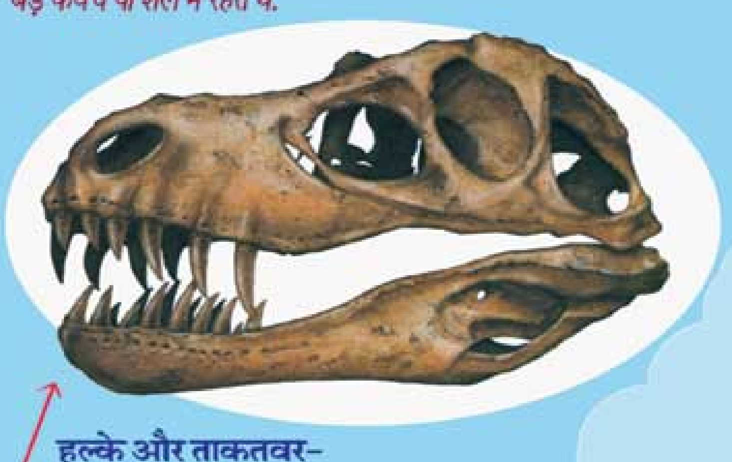

हल्के और ताकतवर-

यहां मौजूद जीवाश्म खोपड़ी एक टी-रेक्स डाइनासौर की है. ये कंकाल और हड्डियां ही हमें ये जानकारी देते हैं कि ये कितने विशाल रहे होंगे. भयानक जबड़ा और नुकीले दांत उस वक्त की अन्य प्राणियों को मारने में बरती इसकी बर्बरता की कहानी बताते हैं.

जीवश्म बनने की प्रक्रिया यूं समझ सकते हैं-

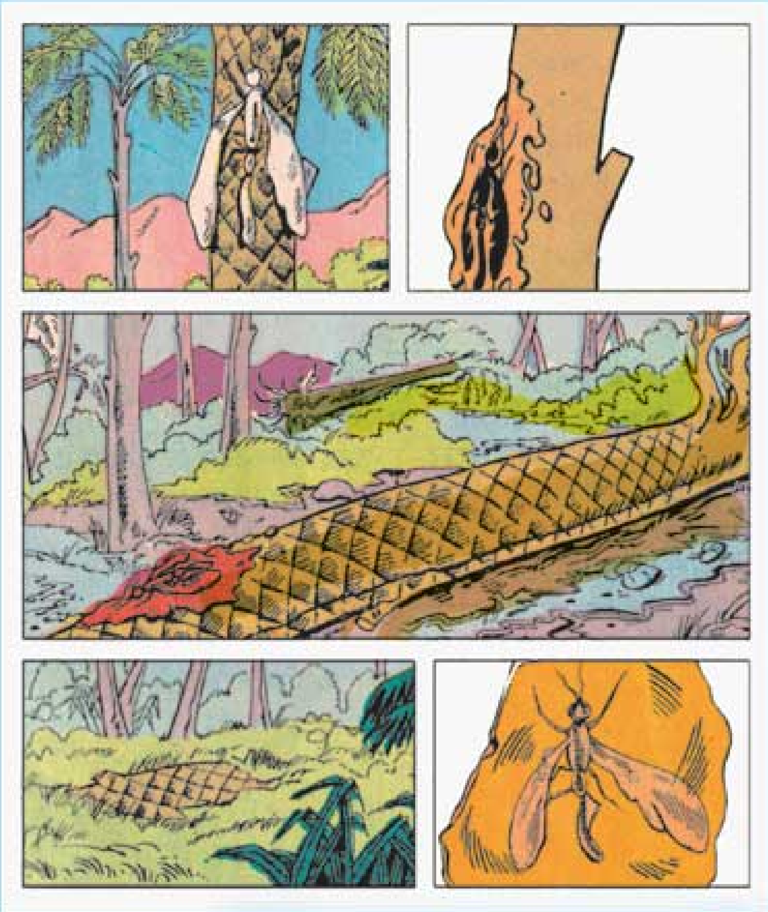

लाखों वर्ष पहले एक कीड़ा पेड़ पर चढ़ रहा था जिसमें से चिपचिपी राल रिसकर टपक रही थी वह कीड़ा राल में ही फंस गया.

कीड़ा तो मर गया पर उसका शरीर सड़ा गला नहीं क्योंकि वह पूरी तरह राल में ढ़का था. समय बीता वह पेड़ एक तूफान के आने पर गिर गया, मिट्टी और धूल कणों से दबकर वह वर्षों तक वहीं दबा रहा, शताब्दियां गुजर गई राल में फंसा कीड़ा दफन ही रहा.

धीरे-धीरे वह ठोस तृणमणि में यानी एम्बर में बदल गया.

आधुनिक युग में मिले उसी एम्बर में फंसा कीड़ा पत्थर में अंदर सुरक्षित दिखता है.

कीड़े, मछली, पेड़ ही नहीं हिमयुग की आपदाओं के शिकार विशाल मॅम्मथ भी इसी तरह सुरक्षित दबे मिल चुके हैं. बर्फ में सुरक्षित वे सभी शारीरिक अवयवों समेत जमे थे.

समाप्त

।। बाल प्रस्तुति ।।

पिता की सीख

कहानी

नीतीश कुमार

मयंक का मन कुछ दिनों से उलझा-उलझा सा था। १०वीं कक्षा की तिथियाँ निकलने के बाद से ही वह घबरा गया था।

वैसे तो मयंक पढ़ाई में ठीक-ठाक ही था, लेकिन अपना काम हमेशा वह शीघ्रता में किया करता था उसे मोबाइल पर खेल खेलना और टी.वी. पर अपने मनभावन कार्टून चैनल देखने की भी लत थी, जिसके कारण से वह अपने सामानों के प्रति लापरवाह भी हो जाया करता था। उसे कभी-कभी समय पर अपने किताबें और नोट्स भी नहीं मिल पाते थे। वह जहाँ पर पढ़ाई करता, वहीं पर शीघ्रता में उसके किताबें और नोट्स छूट जाते थे।

वह हमेशा परीक्षाओं के समय घबरा जाता था, परन्तु इस बार वह परीक्षा के नाम पर अधिक ही चिंतित हो उठा था। उसे कभी लगता कि परीक्षा में जिन अध्यायों की उसने ठीक से पढ़ाई नहीं की है, उसी अध्यायों से सारे प्रश्न परीक्षा में आ गए हैं। कभी उसे लगता है कि परीक्षा कक्ष में पहुँचकर घबराने के कारण से वह याद किए हुए सारे उत्तरों को ही भूल गया है।

चिंता का प्रभाव उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

शुरु में माँ ने सोचा कि हमेशा की तरह इस बार भी वह परीक्षा के नाम से घबराया हुआ है और कुछ ही दिनों में वह सामान्य हो जाएगा। परन्तु दिनों-दिन उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी। अब उसे खाना-पीना भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह चिड़चिड़ा स्वभाव का हो गया था और अपने पढाई के कमरे में जोर-जोर से चिल्लाकर अपनी पढाई किया करता था। चिढ़चिढ़ाहट होने के कारण वह अपनी माँ से भी ठीक से बातें नहीं किया करता था। उसके स्वभाव में आए अचानक परिवर्तन से माँ घबरा गई और उसके बारे मं पिताजी से बात की।

मयंक के पिताजी एक निजी संस्थान में प्रबंधक थे। वे देर रात में कार्यालय का सारा काम निपटाकर घर आया करते थे। पिताजी ने जब माँ से सारी बातें सुनी तो वे चिंतित हो उठे। उन्होंने माँ से कहा कि कल सुबह उठकर वे इस बारे में मयंक से बात करेंगे।

सुबह उठकर वे मयंक के पढाई वाले कमरे में गए। वहाँ उन्होंने देखा कि मयंक के सारे सामान इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। उसकी सभी किताबें और नोट्स भी खुले हुए हैं। मयंक हड़बड़ाया अपनी कॉपियाँ खोलकर कुछ याद करने की कोशिश कर रहा था।

पिताजी तब उसके पास आए और उसके परीक्षा की तैयारी के बारे में पूछा। मयंक ने अनमने ढंग से अपनी अधूरी तैयारी के बारे में उन्हें बताया।

फिर पिताजी ने मयंक को बताया कि जब वे विद्यालय में परीक्षा की तैयारी करते थे तो वे भी बहुत घबरा जाते थे। परीक्षा के नाम से ही उन्हें डर लगने लगता था। उन्हें लगता था कि परीक्षा के दिन याद की हुए सभी चीजें वे भूल जाएंगे।

पिताजी की बातें सुनकर मयंक आश्चर्यचकित रह गया। फिर पिताजी ने बताया कि जब उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से अपनी परीक्षा की तैयारी शांत मन से की तो धीरे-धीरे उनका डर हमेशा के लिए खत्म हो गया।

मयंक को पिताजी की बातें काम की लगी। वह पिताजी की बातें उत्साहपूर्वक सुन रहा था। उसने फिर पिताजी को बताया कि वह भी इस बार परीक्षा के नाम से बहुत डरा हुआ है। उसे लग रहा है कि डर में तनाव की

वजह से उसकी परीक्षा खराब न हो जाए।

पिताजी ने तब उसे डर और तनाव भगाने के उपाय बताए। उन्होंने मयंक से कहा कि सबसे पहले तो वह अपने किताबें, नोट्स सभी आवश्यकता के सामानों और कमरे को सुव्यवस्थित ढंग से रखे, ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसे कोई भी चीज सरलता से मिल जाये। साथ ही उसे मोबाइल और टीवी की आदत को अपने ऊपर सवार न होने दे, जिससे उसका पूरा ध्यान परीक्षा की तैयारी पर रहे।

फिर पिताजी ने मयंक को प्राणायाम और कुछ साधारण योग–आसन सिखाए जो उसके दिमाग को शांत रखे। मयंक को प्रणायाम और योगासन सीखकर बहुत अच्छा लगा। उसने पिताजी से कहा कि अब वह नियमित रूप से हर दिन इसे करेगा।

मयंक की तैयारी के अनुरूप पिताजी ने क्रम बनाया था। मयंक क्रम देखकर चहक उठा। उसे लगा कि अगर कार्यक्रम के अनुरूप वह तैयारी कर ले तो परीक्षा में उसके बहुत अच्छे अंक जा जायेंगे।

मयंक को प्रसन्न देखकर पिताजी ने कहा कि उसे अब पढ़ी हुई चीजों को लिख–लिखकर अभ्यास करना चाहिए और पढ़ी और लिखी हुई चीजों को कुछ देर मन ही मन सोचना चाहिए। इस तरह से उसे सारी चीजें अच्छी तरह से समझ में आ जाएंगी और लंबे समय तक भी याद रहेंगी।

मयंक ने पिताजी से कहा कि अब वह ऐसे ही परीक्षा की तैयारी करेगा। साथ ही साथ अब वह मोबाइल और टीवी की आदत को अपने ऊपर सवार भी नहीं होने देगा।

मयंक जोश से भरा हुआ था। पिताजी उसके जोश को देखकर मन ही मन खुश थे। उन्होंने सोचा कि परीक्षा समाप्त होने तक वे संस्थान से कुछ अतिरिक्त छुट्टियाँ ले लेंगे और मयंक की तैयारी में उसका उत्साह बढ़ाएंगे।

– मलहरा (झारखण्ड)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

रोहित की ओर इशारा करते हुए मोनी राजू से कहती है- "वह मेरे चाचा के पिता की बेटी का बेटा है।" बता सकते हो कि रोहित मोनी का रिश्ते में क्या लगेगा?

(उत्तर इसी अंक में)

चीकू की जिद

लघु कहानी

नीरज कुमार मिश्रा

चीकू अब छठी कक्षा पास करके सातवीं में आ गया था। नयी कक्षा नयी किताबों ने चीकू के अंदर एक नया उत्साह भर दिया था।

चीकू के पास विद्यालय जाने के लिए एक काले रंग की पुरानी साइकिल थी वह चीकू उसे विद्यालय नहीं ले जाता था। वह पैदल ही विद्यालय जाता था।

एक दिन की बात है जब चीकू विद्यालय जा रहा था तब रास्ते में उसे अपना सहपाठी मनोज मिला जो लाल रंग की चमचमाती साइकिल पर ऐसे तन कर जा रहा था जैसे की कोई शाही सवारी पर जा रहा हो।

मनोज ने चीकू को देखकर साइकिल रोकी और उससे कहा ''चीकू आज मेरी नई साइकिल आई है, आज इसी पर बैठकर चलते हैं। पहले पहल तो चीकू का मन नयी नयी साइकिल पर बैठने को मचल गया पर अगले ही पल उसके आत्म सम्मान ने उसको ऐसा करने से रोक दिया और चीकू बहाना बनाते हुए बोला– ''तू चल मैं पैदल ही आऊँगा, मुझे अभी यहाँ थोड़ा काम है।''

ऐसा कहकर मनोज को तो उसने चलता कर दिया पर अंदर ही अंदर उसके मन में नई साइकिल के प्रति ललक जाग उठी।

फिर क्या था घर पहुचते ही चीकू ने माँ के सामने नयी साइकिल दिलाने की मांग कर दी।

माँ ने चीकू को बहुत समझाया कि ''पिताजी एक मामूली अध्यापक है और मनोज के पिता बैंक में प्रबंधक पद पर काम करते हैं और हम इस समय ऐसे हालत में नहीं हैं कि नयी साइकिल खरीद सकें, अतः तुम्हे पैदल ही विद्यालय जाना होगा।

सभी चीकू को समझाकर हार चुके थे पर चीकू तो लाल रंग की नयी साइकिल की रट ही लगाये हुए था।

चीकू ने अब घर में सभी से बात करना छोड़ दिया था, और बात बात पर चिढ़चिढ़ाना उसका स्वभाव हो गया था।

इसी तरह कई दिन हो गए पर चीकू ने किसी से बात नहीं की।

एक दिन की बात है जब चीकू अनमना सा अपने घर के छज्जे पर खड़ा था। उसने सामने सड़क पर एक आदमी को देखा जिसका पैर घुटने के ऊपर से कटा हुआ था उसके हाथों में बैसाखी थी, ऐसा लग रहा था कि एक एक कदम चलने में भी बहुत परिश्रम लग रहा हो।

उसे देख साहस चीकू का विवेक जाग उठा और उसके आँखों में आँसू छलछला उठे उसने सोचा कि एक वो आदमी है जो लंगड़ा है उसे एक एक कदम चलने में असुविधा हो रही है और एक मैं जो भगवान के द्वारा दी गई इन अमूल्य पैरों का मूल्य न समझकर बेकार ही किसी की नई साइकिल के पीछे लालच कर रहा हूँ उसी पल चीकू ने अंदर जाकर माता–पिता से माफी मांगी और भविष्य में कभी किसी चीज के लिए जिद न करने का वादा भी किया। फिर चीकू ने कभी जिद नहीं की।

न ही किसी की चीजें देखकर लालच किया और चीकू उस दिन से आनंदपूर्वक पैदल ही विद्यालय जाने लगा। **– पलिया कलां (उ.प्र.)**

चित्र पहेलियां

• चांद मो. घोसी
मेड़तासिटी (राज.)

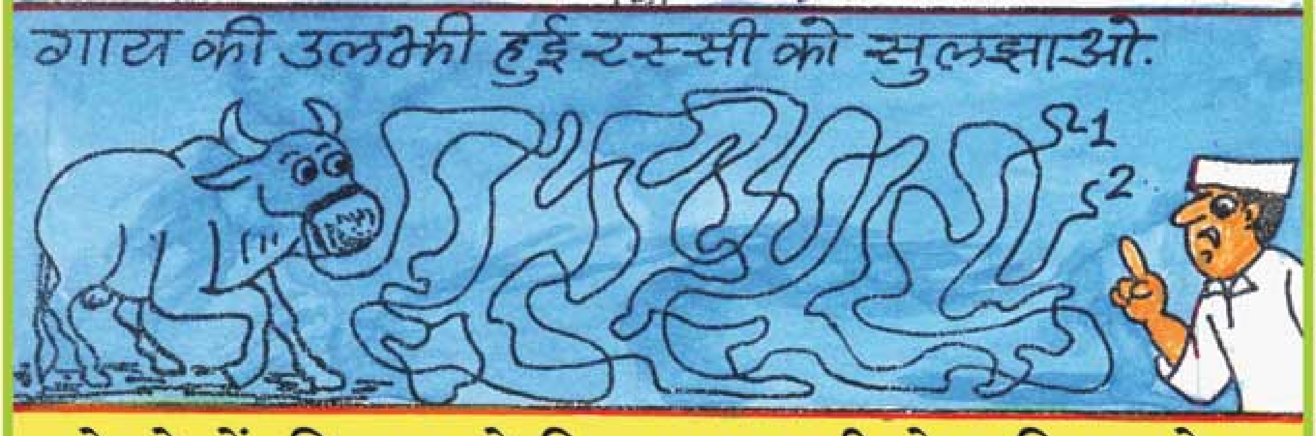

दो गोलों की मदद से चित्र बनाना सीखो व सिखाओ।

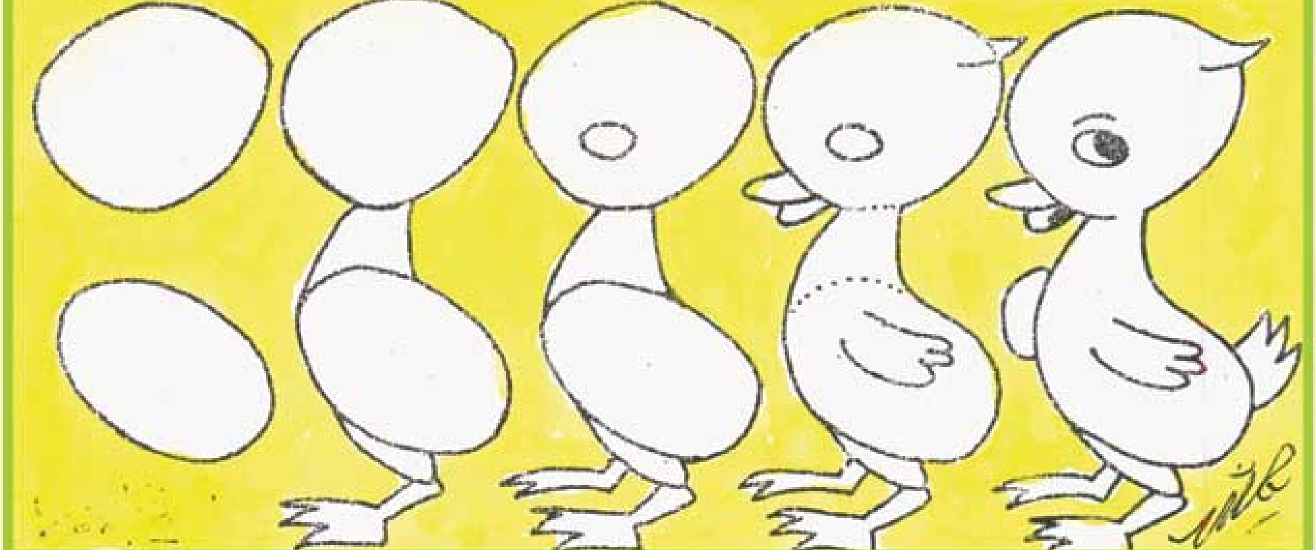

तुम सही थे शौर्य

कहानी

पवन चौहान

आज दादा एक प्यारा सा तोता अपने साथ लेकर घर पहुँचे तो शौर्य का मुखड़ा खिल उठा। वह दौड़ कर सीधा दादा के पास पहुँच गया। पिंजरे को अपने हाथ में लेकर खुशी से झूम उठा। कुछ दिन पहले जब वह पूरे परिवार के साथ चिड़ियाघर देखने गया था तब शौर्य ने अपने पिता से एक चिड़िया पालने की जिद की थी। लेकिन पिता ने शौर्य को यह कहकर मना कर दिया था कि कौन इनका बीट साफ करता रहेगा। इनकी देखभाल के लिए उनके पास समय नहीं है।

लेकिन आज दादा जी तब तोता लेकर आए तो दादाजी उसे और भी प्यारे लगने लगे। परन्तु वह दादाजी से थोड़ा सा रूठा हुआ भी था कि वे तोता उस समय लेकर आए जब उसके विद्यालय की छुट्टियाँ समाप्त होने को थीं।

शौर्य ने सुन रखा था कि तोता मनुष्यों की आवाज की नकल करता है। उसने पुस्तक में तोते का नाम मिट्ठू भी पढ़ा था। इसलिए वह उसे मिट्ठू–मिट्ठू पुकारता लेकिन तोता कुछ नहीं कहता था। उसने सोचा, शायद यह नाम इस तोते का नहीं है। इसका नाम और होगा, जैसे हमारे होते हैं। लेकिन अलग से नाम लेने पर भी वह कुछ नहीं बोलता था। इस बात की शिकायत लेकर शौर्य दादाजी के पास पहुँचा। दादाजी यह कैसा आलसी तोता ले आए हैं आप? यह कुछ बोलता ही नहीं हैं। मुझे तो इसका नाम भी नहीं पता चल पा रहा है।

दादाजी ने शौर्य को समझाया, ''अभी दो–तीन दिन पहले ही इसे पकड़कर पिंजरे में कैद किया है। इसलिए यह सब सीखने में उसे समय लगेगा, और रही नाम की बात तो तुम इसे टुइयां भी कह सकते हो।''

''टुइयां'' यह अलग सा नाम सुनकर शौर्य जोर–जोर से हँस पड़ा।

''बेटे! इसका सिर लाल रंग का है और तीखी टिटियाने वाली आवाज के कारण यह टुइयां नाम से मशहूर है इसलिए'' दादा ने जानकारी दी।

शौर्य को भी यह अलग सा नाम बहुत पसंद आया। वह अब इसे टुइयां कहकर ही पुकारता था।

वह रोजाना तोते को दाना, पकी हुई रोटी, मिर्च आदि डालता, उसके पिंजरे में रखे कटोरे में ताजा पानी भरता। खाने की चीजें तो वह बिना पिंजरा खोले ही बाहर से डालता लेकिन जैसे ही पानी भरने के लिए कटोरा निकालने लगता या उसे रखने लगता तो टुइयां बाहर निकलने के लिए खूब छटपटाता। लेकिन शौर्य उसे दोबारा पिंजरे के अंदर धकेल देता। इसी के चलते परसों टुइयां ने शौर्य की अंगुली को अपनी पैनी चोंच से काट दिया था। शौर्य पीड़ा से खूब चिल्लाया था। उसे उंगली में पट्टी बांधनी पड़ी थी तब जाकर खून रुका। इसके बाद डर के मारे अब शौर्य पिंजरा नहीं खोलता था। वह अब सिर्फ खाना ही देता था। पानी की जिम्मेदारी अब दादा की थी।

शौर्य दाना डालते हुए उसकी पूँछ को बार–बार छेड़ता। उसे पकड़ने की कोशिश करता लेकिन टुइयां हर बार घूम–घूम जाता था। अपनी प्यारी पूंछ को पकड़ने नहीं देता था। पूंछ लंबी थी इसलिए वह हल्की सी पिंजरे के बाहर निकल जाती थी। इसका नुकसान टुइयां को शीघ्र ही झेलना पड़ा। एक दिन मौका लगते ही उसी पूंछ से उसे बिल्ली ने दबोच लिया। वह तो पूंछ से घसीटकर टुइयां को खा जाना चाहती थी लेकिन टुइयां की चिल्लाने की आवाज सुनकर शौर्य दौड़कर पहुँचा और बिल्ली को भगा दिया। इस छीना–झपटी में टुईयां की पूरी पूंछ ही निकल गई थी। वह बच गया था। लेकिन बिना पूंछ के वह बहुत अजीब सा लग रहा था। शौर्य आज इस बिना पूंछ के तोते को देखकर लगातार हँसता जा रहा था। इसी हँसी में वह बार बार टुइयांऽऽ टुइयांऽऽ कह रहा था। हुआ यह कि आज पहली बार तोता भी बोला– ''तुइयां...तुइयां...।''

यह सुनकर शौर्य की हँसी एकदम रुक गई। वह चकित था। टुइयां के मुँह से कुछ सुनने को वह तरस रहा था। आज उसकी इच्छा पूरी हो गई। अब जब भी शौर्य कुछ कहता तो टुइयां भी उसे दोहराने की कोशिश करता। उन दोनों की अब दोस्ती हो चुकी थी। टुइयां ने शौर्य को अब कभी काटा भी नहीं।

परन्तु शौर्य ने आज दोपहर को जो देखा, उसने उसे बहुत कुछ सोचने पर विवश कर दिया था। जब शौर्य अपना विद्यालय का काम करके कमरे से बाहर निकला तो उसके पैर द्वार पर ही ठिठक गए। उसने देखा टुइयां के पिंजरे के बाहर एक अन्य तोता पिंजरे की तारों को अपनी चोंच से बार–बार खीचने का काटने का प्रयास कर रहा हे। लेकिन जैसे ही उसकी दृष्टि शौर्य पर पड़ी तो वह उड़ गया।

जब शौर्य पिंजरे के पास पहुँचा तो शौर्य ने देखा कि पिंजरे के किनारे पर खून की कुछ बूंदें गिरी हुई हैं। उसे समझते जरा भी देर नहीं लगी कि यह उस दूसरे तोते की चोंच से गिरी हैं। वह कोई उसका अपना है। यह सब देखकर शौर्य का हृदय पिघल गया। वह सीधा दादा जी के पास पहुँच गया और बोला, दादाजी अब मैं टुइयां के साथ काफी खेल चुका हूँ। मुझे पता है कि आप यह मेरे लिए ही लेकर आए थे। मेरी छुट्टियाँ भी अब समाप्त ही होने को है। अब आप इसे छोड़ दें।''

दादाजी आश्चर्य करते हुए बोले– ''शौर्य! यह आज अचानक तुम्हें क्या हो गया है?''

''कुछ नहीं दादाजी! बस इतनी सी बात समझ आई है कि स्वतंत्रता सबको प्रिय है।''

''लेकिन शौर्य मैं इसे नहीं छोड़ पाऊंगा। मैं जिस कार्य के लिए इसे लेकर आया हूँ वह अभी पूरा नहीं हुआ है।''

''मैं समझा नहीं दादाजी!'' शौर्य आश्चर्य से बोला।

इसे मैं तुम्हारे लिए नहीं पूरे परिवार की खुशियों के लिए लेकर आया हूँ। पिछले दिनों मुझे पंडित जी मिले थे। उनसे जब तुम्हारी दादी के बार–बार बीमार होने की बात चली तो उन्होने तोता पालने की सलाह देते हुए बताया कि बुधवार के दिन तोता घर पर लाने से जहाँ घर से रोग भागेंगे वहीं घर की सारी परेशानी भी दूर होंगी और पिंजरे को उत्तर दिशा में रखने से जहाँ बच्चों का पढ़ने में मन लगा रहेगा वहीं उनकी स्मरण शक्ति भी बढ़ेगी। इसलिए....''

शौर्य दादा जी की आवाज को काटते हुए बोला, ''दादाजी! आप भी किन चक्करों में पड़ गए हो? मैं तो अभी तक यही सोच रहा था यह आप मेरे लिए लेकर आए हैं लेकिन यहाँ तो बात और ही निकली।''

''बेटा! पंडित जी ने विश्वास दिलाया है कि इसे पालने से बहुत लाभ होगा।''

''दादाजी! तोता लाभ नहीं देगा। यह सब तर्कहीन मान्यताएं है। हमने पढ़ा है पुस्तकों में। आप दादी को किसी अन्य अच्छे डॉक्टर को दिखाओ और दादाजी रही मेरी बात तो यह आपको भी पता है कि मुझ पढ़ाई में कोई कठिनाई नहीं है। साथ ही मुझे, हर विषय शीघ्र याद भी हो जाता है। इससे अधिक और मुझे कितना चाहिए?''

''बेटा! तुम अभी बहुत छोटे हो। तुम इन बातों को नहीं समझ पाओगे।'' दादा जी ने समझाने की कोशिश की।

''दादाजी! यह सब तो ठीक है लेकिन आप इन भ्रमों में न पड़ें। ऐसा करके कोई खुशियाँ या शांति घर में आने वाली नहीं है। हो सके तो आप टुइयां को छोड़ दें। टुइयां को कैद कर कुछ नहीं होने वाला। यह यहाँ खुश नहीं है। इसे अपने आसमान में, अपनी मस्ती में उड़ने दीजिए। अपने साथियों से मिलने दीजिए। हम लोगों के साथ रहकर यह सुखी तो थोड़ा भी नहीं है।''

लेकिन दादाजी शौर्य की बात से सहमत नहीं हुए।

शाम को जब दादा जी गौशाला में गाय को दुहने के लिए गए थे तो शौर्य ने अवसर का लाभ उठाने की सोची। वह चुपके से जैसे ही टुइयां का पिंजरा खोलने लगा तो दादा जी ने उसे देख लिया। उसे डांट भी पड़ी और दादाजी ने पिंजरे के दरवाजे पर ताला भी जड़ दिया। जिसकी चाबी अब दादा जी की जेब में ही रहती थी।

अब शौर्य की छुट्टियाँ भी समाप्त हो चुकी थीं। वह आज बुझे मन से विद्यालय जा रहा था । विद्यालय जाते हुए शौर्य ने आज खूब सारे दाने पिंजरे के भीतर रखकर पानी की कटोरी भी भर दी थी।

पूरा दिन शौर्य विद्यालय में उदास ही रहा। उसे टुइयां की कैद ही नजर आती रही। शाम को जब शौर्य घर पहुँचा तो घर के बरामदे में लोगों की भीड़ देखकर चिंतित हो गया। दौड़कर जब नजदीक पहुँचा तो उसने देखा, दादाजी के पेट में नाभि के पास गोलाई में पट्टी बंधी है। दादा जी को अभी भी पीड़ा हो रही थी।

सुबकते हुए वह बोला, ''दादाजी यह कैसे हुआ?''

''बेटा! तेरे काका की दुकान से सामान लाने जा रहा था कि तभी अचानक आवारा सांड ने पेट पर जोरदार टक्कर दे मारी। आज मरते–मरते बचा हूँ।''

इस बात पर शौर्य ने दादाजी को एक बार फिर से कसकर पकड़ लिया था। हल्दी सी चुप्पी के बाद वह दादाजी के कान में चुपके से बोला, ''दादाजी! अब बताओ? तोता पालने से कौनसी खुशियाँ और शांति आई घर में?''

इतने में पिताजी बोले, ''शौर्य! पहले बस्ता रखकर अपनी गणवेश बदल लो।''

शौर्य जैसे ही जाने को हुआ तो दादा जी ने शौर्य के हाथ पकड़कर उसे रोका और पिंजरे की चाबी उसे हाथ में देते हुए बोले, ''तुम सही थे शौर्य। जाओ, पहले टुइयां को अपना आकाश नापने दो।''

''वाह, दादा जी आपका बहुत बहुत धन्यवाद।'' शौर्य खुशी से चिल्ला उठा।

बस्ते को एक और रखता हुआ वह पिंजरे की ओर दौड़ पड़ा।

कुछ ही पलों में टुइयां अपने मित्र के साथ एक लंबी उड़ान पर निकल चुका था।

– महादेव (हि.प्र.)

बाल पहेली

पहेलियाँ

भानुप्रताप सिंह

(१)

चलती हूँ पर पाँव नहीं,
जहाँ न जाऊँ ठांव नहीं।
गर्मी में सब के मन भाऊँ,
सर्दी में ठण्डक ले आऊँ।।

(२)

पल में आती पल में जाती,
सही-सही प्रतिबिंब दिखाती।
लगभग रहती सब के पास,
करती हूँ आँखों में वास।।

(३)

पानी जैसा पतला हूँ,
रंग का उजला-उजला हूँ।
मुझको फाड़ पनीर बनाते,
टुकड़े-टुकड़े करके खाते।।

(४)

मीठी हूँ पर चीनी नहीं,
गुड़ गन्ना से बनी नहीं।
बूढ़े बालक और जवान,
खाकर बनते हैं बलवान।।

(५)

पेट, पीठ, मुख, पंजे चार,
वह रहती छत, छेद दीवार।
छोटे-छोटे कीड़े खाती,
कीटों की श्रेणी में आती।।

(उत्तर इसी अंक में)

घोड़े का वजन

चित्रकथा : देवांशु वत्स

॥ स्तम्भ ॥

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

कुछ साल पूर्व स्वर्गीय राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू दिल्ली विश्व विद्यालय में आमंत्रित थे। भोजन खत्म हो जाने के बाद वे छात्रों को आटोग्राफ दे रहे थे। जो भी कुछ उनके पास लिखकर ले जाता, वे उस पर हस्ताक्षर बना दिया करते थे। एक चालाक विद्यार्थी ने इस अवसर पर राजेन्द्र बाबू को छकाने की सोची। उसने अपनी कापी पर लिखा– '' मेरी सरकार बड़ी खुशी के साथ आपको स्वर्ग का गवर्नर मुकर्रर करती है।''

हस्ताक्षर के बाद जब कापी उसने देखी, तो उस पर लिखा था, ''मेरी सरकार बड़ी खुशी से आपको स्वर्ग का गर्वनर मुकर्रर करती, मगर अभी वहाँ जगह खाली नहीं है इसलिए आपको नरक का गर्वनर नियुक्त किया जाता है।''

*****

राजेन्द्र बाबू अपने गाँव जीरादेई जा रहे थे। नौका में एक मुसाफिर ने सिगरेट सुलगाई। सिगरेट के धुए से देशरत्न की खासी उभर आई। जब गंध असह्य हो उठी, तो उन्होंने मुसाफिर से पूछा, ''ई सिगरेटवा अपने न ह?'' (यह सिगरेट आपकी ही है न?) जवाब मिला, ''मेरी नही, तो क्या आपकी है?'' देशरत्न ने कहा, ''त ई धुअवां भी त अपनहीं के होई। काहे न ऐकरी संजो के रखत बानी, दोसरा पर कहो फेंकत बानी?'' (तो यह धुंआ भी आपका ही हुआ। इसे अपने पास न रख दूसरे पर क्यों फेंकते हो?) मुसाफिर ने लजाकर सिगरेट फेंक दी।

विज्ञप्ति

सरस्वती वन्दनाएँ आमंत्रित

खड़ी बोली गीत विधा में संगीत के साथ प्रस्तुत की जा सकने वाली दो–दो सरस्वती वन्दनाएँ ग्रंथ 'वीणावादिनी वन्दे' में प्रकाशनार्थ रचनाकारों से सादर आमंत्रित हैं।

॥ संपर्क ॥

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना,
निकट बावन चुंगी चौराहा, हरदोई
241001 (उ.प्र.) मोबाइल नं. 07607983984

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला – विभीषण, अर्जुन, भारत, श्रीकृष्ण, आठवें, सम्राट खारवेल, मैथिलीशरण गुप्त, अशफाक उल्ला खान, रावल पिण्डी, बालाकोट

उलझ गए – रोहित मोनी का फुफेरा भाई है।

पहेली – (१) हवा (२) नजर (३) दूध (४) शहद (५) छिपकली

यह देश है वीर जवानों का (३)

लांस नायक करम सिंह

२३ मई, १९४८ को टिथवाल जम्मू कश्मीर पर भारतीय कब्जे से तिलमिलाया पाकिस्तान रिचमार गली और टिथवाल को पुनः हथियाना चाहता था। १३ अक्टूबर १९४८ को ईद के दिन उसने अपनी एक ब्रिगेड इसी उद्देश्य से भेजी पर सामने प्रथम बटालियन (१सिख) सीना ताने खड़ी थी। तोपों, मोर्टारों व मशीनगनों से हमले हुए पर प्रथम बटालियन ने डट कर उत्तर दिया। उस दिन साढ़े नौ बजे दुश्मनों ने पुनः हमला किया और दस बजे मोर्चे पर आक्रमण कर दिया पर उन्हें मार भगाया गया। बड़ी तोपों से फिर हमला हुआ। अब तक १ सिख के (प्रथम बटालियन) के अधिकतर बंकर इस मार से नष्ट हो चुके थे। भारतीय वायुसेना की सहायता ली गई। तीसरी बटालियन (जाट) की दो कम्पनियाँ भी वहाँ जा पहुँची और तोपें तैनात की गई पर तब तक १ सिख के १० जवान बलिदान हो चुके थे। ३७ घायल हो चुके थे। १३-१४ अक्टूबर की रात भीषण गोलाबारी हुई प्रातः साढ़े सात बजे शत्रु की दो कम्पनियाँ चढ आई पर उसके सारे सैनिक मारे गए। भारतीय जंगी हवाई जहाज दुश्मन के तोपखानों को शिकार बना रहा था। रिचमार गली पर कब्जे की दुश्मन की योजना धराशायी हो चुकी थी।

शाम सात बजे तक दुश्मन के आठ आक्रमण विफल कर दिए गए इस अद्भुत शौर्य एवं साहस के प्रदर्शन के लिए लांस नायक करमसिंह और उनके साथियों का योगदान भारतीय इतिहास में वज्रअक्षरों में लिखा जा चुका था। श्रीकरम सिंह को भारत सरकार ने 'परमवीर चक्र' प्रदान किया। विशेष प्रसन्नता की बात यह है कि यह सर्वोच्च सैन्य सम्मान वे स्वयं प्राप्त कर सके।

चित्र बनाओ

• राजेश गुजर

बच्चों, आओ आसानी से जिराफ का चित्र बनाओ, रंग भरें।

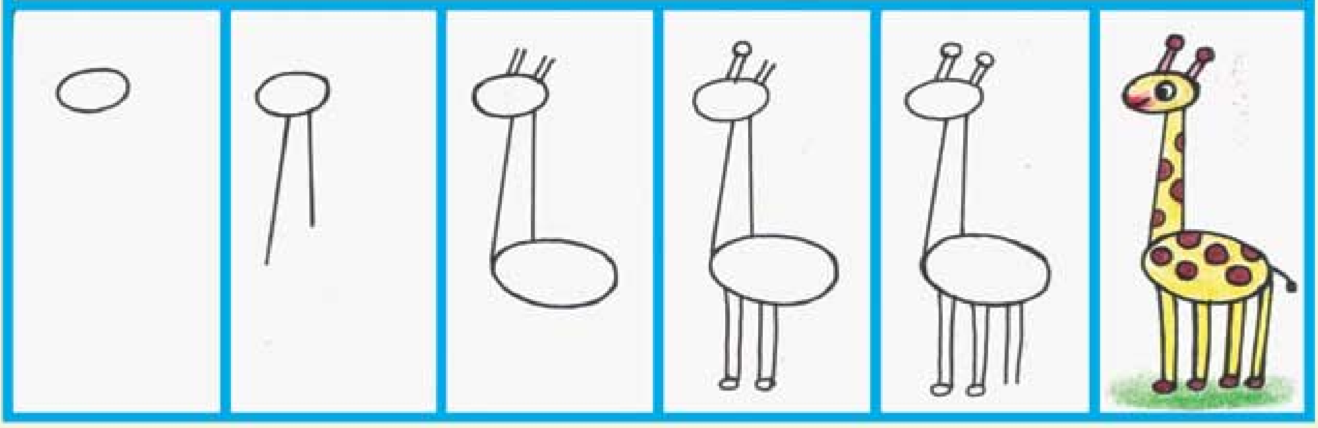

पुस्तक परिचय

बच्चो! **डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल** बाल साहित्य जगत में अपने उत्कृष्ट लेखन और उत्तम संपादन के जाने माने हस्ताक्षर हैं। इस बार आपने बच्चों के लिए विभिन्न विषयों पर केन्द्रित १५-१५ कहानियों की आठ पुस्तकों का एक संच संपादित किया है।

इस संच में आपको हिन्दी बाल कथा के मूर्द्धन्य साहित्यकारों डॉ. कामना सिंह, कीर्ति श्रीवास्तव, डॉ. उषा यादव, सविता चड्ढा, स्वयं डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल, दिविक रमेश, डॉ. विकास दवे, पवन चौहान, हरीश कुमार 'अमित', पवित्रा अग्रवाल, डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता', डॉ. शकुन्तला कालरा, दीनदयाल शर्मा, अब्दुल समद 'राही', बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान', सुकीर्ति भटनागर एवं चैतन्य कुमार श्रीवास्तव की सरस, बोधक, मनोरंजक और उद्देश्य प्रधान बाल कहानियाँ पढ़ने को मिलेंगी।

- इन पुस्तकों के प्रकाशक है : सूर्य भारती प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली ११०००६
- प्रत्येक पुस्तक का मूल्य है : ४०रु. मात्र

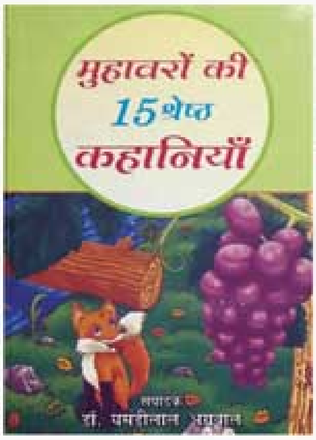

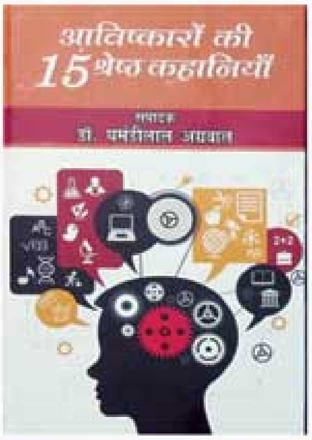

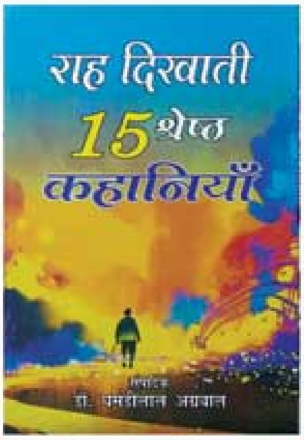

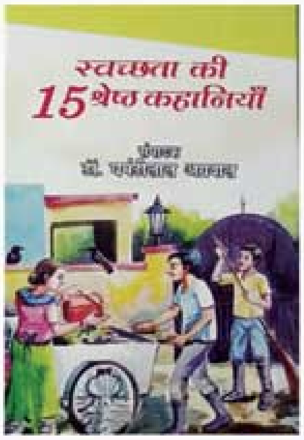

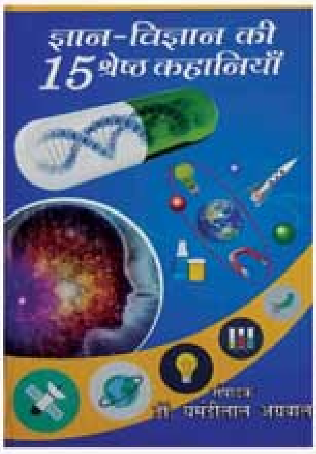

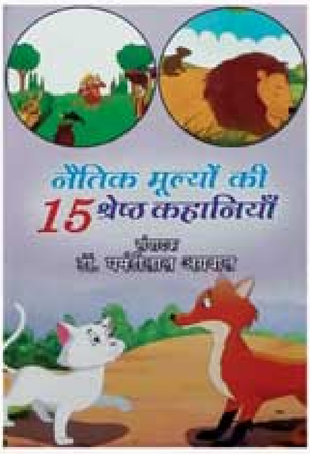

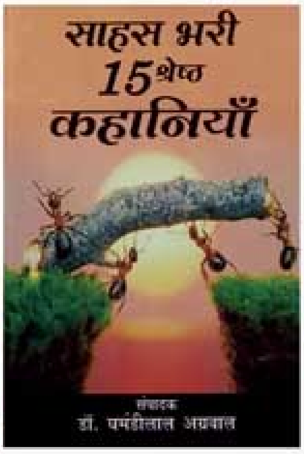

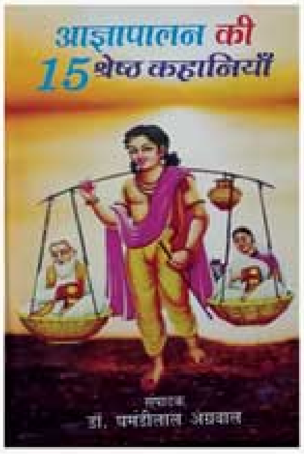

भोजन का डिब्बा

कहानी

प्राजक्ता देशपाण्डे

''माँ! कहाँ हो आप?'' कक्षा सात की छात्रा अवनी गुस्से में माँ को आवाज लगाते हुए घर में घुसी, शाला में भोजन अवकाश के बाद से ही उसका मन खराब था। माँ ने चिंता भरी आवाज में पूछा– ''क्या हुआ? तुम इतनी नाराज क्यों हो रही हो? किसी से झगड़ा हुआ या किसी ने कुछ कहा?''

''आजकल मेरी कोई भी सहेली ने मेरे साथ भोजन में भागीदारी नहीं करती। सब कहती हैं तू बड़ा ही उबाऊ भोजन लाती हैं।'' अवनी ने नाराजगी के साथ उदासी भरे अंदाज में जवाब दिया।

''ओह! उन्हें क्या पसंद नहीं आता?'' माँ ने सवाल किया।

''आजकल आप एक दो दिन में अंकुरित अनाज रख देती हो न, सब कहते हैं कि इन्हे तो देखकर ही खाने का मन नहीं करता, वैसे मुझे भी वो बिलकुल पसंद नहीं ''अवनी ने मुँह बनाकर जवाब दिया।

''बस इतनी सी बात, चलो आज से एक खेल खेलते हैं ''माँ ने अवनी का मन ठीक करने के लिए कहा।

फिर माँ ने अवनी को एक पात्र में थोड़े से चने दिए और उसमें पानी डालकर ढँक कर रखने को कहा, अवनी का मन यह सब करने का था तो नहीं, पर खेल का नाम सुनकर मान गई।

अगली सुबह अवनी ने देखा कि सारे चने पानी पी कर फूल चुके थे, उसे बड़ा मजा आया।

माँ ने कहा, ''अब इसे हम किसी सूती कपड़े में लपेटकर रख देंगे फिर इसे एक दो दिन बाद ही खोलेंगे।''

अवनी ने सिर हिलाकर हामी भरी और विद्यालय के लिए निकल गई, कपड़े की वह पोटली उसे किसी जादुई पोटली की तरह लग रही थी।

दो–तीन दिन बाद माँ ने उसे पोटली खोल कर देखने को कहा। अवनी ने देखा सभी चनों में से छोटे–छोटे (पूंछ जैसे) रेशे निकल आए, देखकर उसे हँसी आ गई। माँ ने बताया कि अंकुरित अनाज ऐसे ही तैयार होता है।

''सच में! पर कैसे?'' अवनी ने उत्सुकता से पूछा।

माँ ने कहा, ''चलो अब इसे एक छोटे से गमले में लगाए।''

दोनों ने मिलकर उन अंकुरों को मिट्टी भरे गमले में बो दिए। अवनी उसे रोज थोड़ा–थोड़ा पानी देती और पौधे के उगने की प्रतीक्षा करने

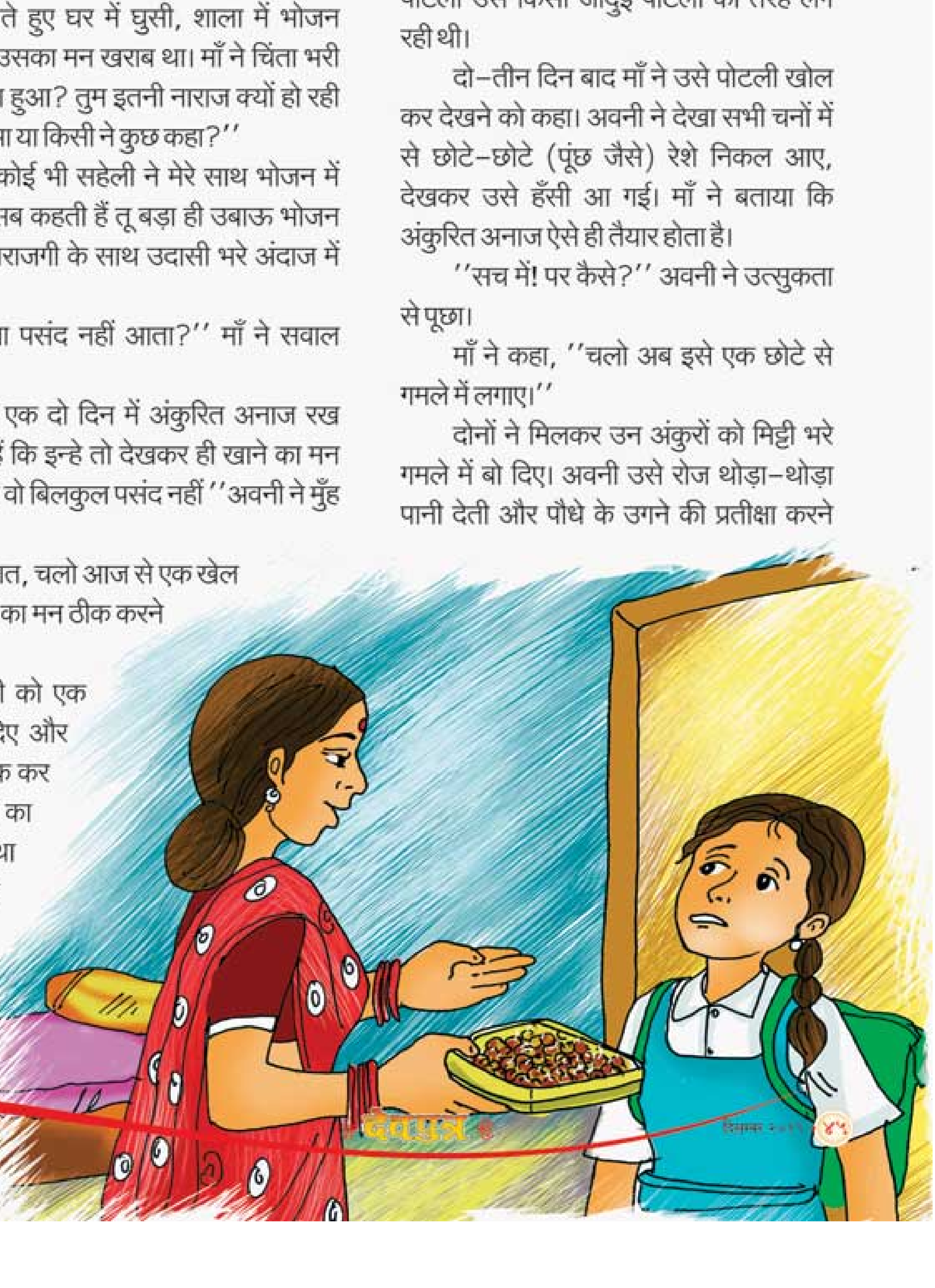

लगी, कुछ ही दिनों बाद उसने देखा कि उन्हीं अंकुरित दानों से छोटे पौधे उग आए, जिसमें नन्हीं-नन्हीं पत्तियाँ भी फूट पड़ी। अवनी को अब इस खेल में बड़ा मजा आ रहा था। माँ ने उसे बताया कि पौधे थोड़े से ओर बड़े होते ही उसमें पहले फूल आएंगे फिर चने जो पौधों के फल हैं।

बस अब क्या था, विद्यालय से आने के बाद वह हर दिन उन पौधों को देखती की कब उनमें चने लगेंगे? एक दिन उसने देखा की पौधे में नन्हें नन्हें चने उग आए। मारे खुशी के चिल्लाते हुए उसने माँ को आवाज दी उन्होंने उन चनों को हल्के हाथों से तोड़ा और अवनी को दिया।

''ये तो बड़े ही मीठे हैं, अंकुरित दानों से इतना टेस्टी चना उगता हैं'' अवनी ने खाते हुए खुशी से कहा।

''बिलकुल, अंकुरित दानों में प्रोटीन और रेशे होते हैं। जो बढ़ते बच्चों के लिए फायदेमंद हैं ''माँ ने समझाया।

''माँ, फिर तो आप मुझे अलग-अलग तरह की अंकुरित चीजें बनाकर देना'' अवनी ने चहकते हुए कहा।

''हाँ-हाँ क्यों नहीं'' कहते हुए माँ मुस्कुरा पड़ी।

अवनी को माँ की सब बातें अच्छे से समझ में आ गई, उसने ऐसे ही और पौधे उगाने का फैसला किया।

अगली सुबह अपने भोजन के डिब्बे को बस्ते में रखते हुए अवनी बहुत खुश थी, वह अपनी सहेलियों को अंकुरित अन्न के बारे में बताने के लिए उतावली जो थी।

– इन्दौर (म.प्र.)

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल सम्मानित

नई दिल्ली। हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला बाल साहित्य सम्मान इस बार गुरुग्राम निवासी प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल को दिया गया।

नई दिल्ली स्थित कमानी सभागार में एक भव्य समारोह में गत ३० सितम्बर को मुख्य अतिथि दिल्ली प्रदेश के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने डॉ. अग्रवाल को सम्मान स्वरूप एक लाख रुपये का चेक, प्रशस्ति पत्र और शाल भेंट कर सम्मानित किया।

इस मौके पर हास्य कवि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की। अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट भी समारोह में उपस्थित थे।

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' अजमेर में पुरस्कृत

अजमेर। अजमेर में सम्पन्न पांचवे आचार्य रत्नलाल विद्यानुग स्मृति अखिल भारतीय बाल साहित्य प्रतियोगिता के अंतर्गत बाल कहानी श्रेणी में कटनी नगर की सुविख्यात कवयित्री, कथाकार एवं बाल साहित्यकार राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत शिक्षिका डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को शब्द निष्ठा २०१९ तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय संयोजक डॉ. अखिलेश पालरिया सहित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. बजरंग सोनी जयपुर, विशिष्ट अतिथि किशोर श्रीवास्तव दिल्ली, अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी सलूम्बर राज. डॉ. आशा शर्मा जोधपुर के कर कमलो से बाल कहानी संग्रह के पाँच एवं बाल कहानी प्रतियोगिता पाँच विजेताओं को सम्मानित किया गया। कटनी से डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को उनकी बाल कहानी 'गुल्लो बुआ' के लिए पुरस्कृत करते हुए शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं नगद धन राशि इकतीस सौ रु. प्रदान कर सम्मानित किया गया।

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

पंजाब का राज्यवृक्ष

शीशम

• डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत सहित कई देशों में,
शीशम पाया जाता।
शानदार लकड़ी के कारण,
जग में नाम कमाता।
मिट्टी कैसी भी हो शीशम,
अपनी जड़ें जमाता।
तेज हवाएँ, सूखा, पानी,
शीशम सब सह जाता।
ऊँचा पैंतिस मीटर तक यह,
पौधा पतझड़ वाला।
मोटी छाल तना अति सुन्दर,
शीशम बड़ा निराला।
आते ही मौसम बसन्त का,
फूलों से भर जाता।
पीत धवल फूलों से शीशम,
वन उपवन महकाता।
छाल, बीज, फल-फूलों से यह,
औषधि कई बनाता,
और टिकाऊ लकड़ी से यह,
घर का रूप सजाता

– भोपाल (म.प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

• विष्णु प्रसाद चौहान

आज का ज्ञान – मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं, जिन्हें ग्राउंड फ्लोर नहीं मिलता...

*****

इंग्लिश के अलावा हिन्दी में भी कुछ शब्द साईलेंट होते है। जैसे कि अगर ध्यान दिया हो तो शादी के समय ये कहा जाता है कि हमारी लड़की तो 'गाय है गाय' उसने 'सींगवाली' शब्द साईलेंट होता है। विदाई के समय जब दूल्हे से कहा जाता है 'ख्याल रखना' इसमें 'अपना' शब्द साईलेंट रहता है।

*****

सोनू (मोनू से) –नथिंग का क्या मतलब है?

मोनू – कुछ नहीं।

सोनू – ऐसा नहीं हो सकता। जब भी कोई शब्द बनता है, तो उसका कुछ मतलब जरूर होता है।

*****

अगर गिलास टूटने के बाद भी घर में खामोशी है, तो समझ लो कि गिलास माँ से टूटा है।

*****

गाँव और शहर में इतने विद्यालय हो गए कि कार्यालय के लिए कोई भी कमीज खरीदो, किसी न किसी विद्यालय की गणवेश से मिल ही जाते हैं।

*****

पिंटू के सिर पर इंटरनेट का भूत इस कदर सवार है कि मेडिकल वाले से पाँच सौ एम.जी. की गोली न मांगकर ५०० एमबी की गोली मांग रहा था।

*****

चिंटू (पिंटू से) व्हाट्स एप अपडेट कर लो

पिंटू – कैसे करते हैं?

चिंटू – प्ले स्टोर पर जाओ और वहाँ से कर लो।

पिंटू – हमारे गाँव में प्ले स्टोर नहीं है। जनरल स्टोर है, वहाँ से कर लूँ।

– ढाबला हरदू (म.प्र.)

आपकी पाती

• जयश्री श्रीवास्तव

देवपुत्र पत्रिका की मैं पाठक हूँ। इस पत्रिका में मनोरंजन, ज्ञान, विज्ञान, सांस्कृतिक, साहित्यिक ऐतिहासिक सभी का इतने सुन्दर ढंग से चित्रण होता है कि पाठक (बालक, बालिका) के अन्तरमन तक उतर जाता है। मुझ से बड़ा उदाहरण क्या होगा मैं इस उम्र में भी इस पत्रिका के आने की राह देखती हूँ। यह तभी संभव होता है जब आप सब मेहनत करते हैं। पुनः साधुवाद!

- प्रयागराज (उ.प्र.)

अपनी अपनी सबकी बोली

कविता

जय कुर्मी

बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करती,
चूँ-चूँ, चूँ-चूँ चुहिया।
होंचू-होंचू गधा रेंकता,
चीं-चीं, चीं-चीं चिड़िया॥
भौं-भौं, भौं-भौं कुत्ता करता
बकरी मैं-मैं, मैं-मैं।
कुकड़ूँ- कूँ करता है मुर्गा,
भेड़ें भैं-भैं, भैं-भैं॥
हुआँ-हुआँ गीदड़ है करता,
मेंढक टर्र-टर्र टर्राता।
पशुओं का राजा कहलाता,
सिंह गरज थर्राता॥
घोड़ा हिन-हिन, हिन-हिन करता,
कोयल कू-कू करती।
मीठी तान सुनाकर अपनी,
है सबका मन हरती॥

– गौरझामर (म.प्र.)

श्रद्धांजलि...

आदरणीय मदनलाल जी नहीं रहे

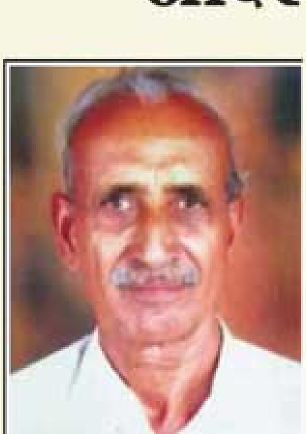

इन्दौर। अत्यंत आत्मीयता से सम्पूर्ण राजस्थान में देवपुत्र की सदस्यता विस्तार हेतु वर्षों सफल प्रयत्न करने वाले श्री मदनलाल जी अग्रवाल २२ अक्टूबर, २०१९ को हमसे चिरविदा ले गए। संघ के वे एक निष्ठावान स्वयंसेवक थे एवं सम्पूर्ण राजस्थान में सतत प्रवास कर देवपुत्र एवं पांचजन्य आदि राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं की सदस्यता विस्तार हेतु अपनी ओर से पुरस्कार एवं सम्मान भी वितरित करते थे। उनका निधन एक अपूरणीय क्षति है जिसकी आंशिक पूर्ति उनके प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए ही की जा सकती है।

देवपुत्र परिवार अपने इस आत्मीय स्वजन के निधन पर उन्हे सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

– देवपुत्र परिवार

ये भी जानिए

प्रस्तुति • राजेश गुर्जर

• बच्चों, आपने नीचे बने हुए प्रतीकों (चित्रों) को देखा होगा, आपको पता है ये अलग-अलग क्षेत्रों को दर्शाते हैं। इनके बारे अधिक जानकारी जानिए –

महाराजा• एअर इण्डिया
ये अतिथि को महाराजा की तरह विशेष एहसास कराने का संदेश देता है। ठाठ-बाट के इस प्रतीक को एअर इण्डिया के बॉबी कूका व उमेशराव ने १९४६ में बनाया।

भोलू गार्ड• भारतीय रेलवे
रेलवे की १५० वीं वर्षगाँठ पर २००२ में एन आई डी ने भोलू को बनाया। इसके हाथ का हरा सिग्नल निरंतर आगे बढ़ते रहने का संदेश देता है।

अमूल गर्ल• १९६६ में विज्ञापन एजेंसी डाकुन्हा के ई फर्नांडीज़ ने यह प्रतीक अमूल कंपनी के लिए बनाया। यह संदेश देता है कि हर घटना को रोचक और जिंदादिल पहलू भी होता है।

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु वर्ष २०१९ के लिए सभी बाल साहित्यकारों से उनकी प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

- इस वर्ष यह पुरस्कार बाल लोककथा के लिए निश्चित किया गया है।
- आप अपनी इस विधा की कोई एक रचना ३१ मार्च २०२० तक अवश्य भेज दें।
- रचना हिन्दी में हो।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' का होगा। जिसे देवपुत्र किसी प्रकाशन संस्थान के सहयोग से भी प्रकाशन की योजना कर सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाओं को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००-५०० रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

प्रविष्टि भेजने का पता -

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९ के लिए यात्रा वृत्तान्त की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी पुरस्कार निधि ५०००/- पाँच हजार रुपए है।

इस हेतु आपकी प्रकाशित कृति (पुस्तक) की तीन प्रतियाँ ३१ मार्च २०२० तक निम्नांकित पते पर सादर आमंत्रित हैं।

प्रविष्टि भेजने का पता –

माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

प्रिय बच्चो!

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति में आयोजित इस प्रतियोगिता में आप बच्चों द्वारा लिखी गई मौलिक एवं स्वरचित कहानियाँ आमंत्रित हैं। आपकी कहानियाँ हमें ३१ मार्च २०२० तक अवश्य मिल जाना चाहिए।

प्रतियोगिता के पुरस्कार हैं –

प्रथम १५००/-, द्वितीय ११००/-, तृतीय १०००/- एवं ५५०/- रुपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

अपनी कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता (पिनकोड सहित) अपना दूरभाष/मोबाइल नं. एवं अपना या अभिभावक का बैंक खाता क्रं. आई एफ एस कोड, खातेदार का नाम बैंक, शाखा का नाम भी अवश्य लिख भेजें जिससे पुरस्कार राशि सीधे उस खाते में जमा की जा सके। प्रविष्टि भेजने का पता –

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९
देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/११/२०१९
प्रेषण तिथि ३०/११/२०१९
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना